राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

8

वर्ष 12 अंक :227 रांची (झारखंड) शुक्रवार,30 मई 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

लोकमाता अहिल्याबाई होलकर सभी युद्धों में विजयी रहीं: बीएल संतोष

चाहे किसान की बात हो, चाहे महिला की बात हो, न्याय की बात हो, व्यापार की बात हो, प्रशासन की बात हो, चाहे ममता हो, रमता हो, चाहे समता हो, सभी विषयों के बारे में प्रदर्शनी लगी है।

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन बीएल संतोष और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरूवार को लखनऊ के जीपीओ पार्क में लगी लोकमाता अहिल्याबाई होलकर की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी में पुण्यश्लोक अहिल्याबाई के जीवन के विविध पहलुओं को उजागर किया गया है। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन बीएल संतोष ने कहा कि लोकमाता ?अहिल्याबाई होलकर सभी युद्धों में विजयी रहीं। उन्होंने कहा कि आज शासन में महिलाओं को शासन में प्रतिनिधित्व देने की बात सोच रहे हैं, लेकिन जब प्रतिनिधित्व व सहभागिता की बात करते हैं तो 300 साल पहले हमारे देश में केवल प्रतिनिधित्व नहीं, केवल भागीदारी देने की बात इतना ही मात्र नहीं, बल्कि नेतृत्व देने का काम अहिल्याबाई ने किया। लोकमाता अहिल्याबाई के जीवन के बारे में लोगों तक विषय पहुंचाने के लिए भाजपा ने देशभर में अभियान लिया है। बीएल संतोष ने कहा कि

चाहे किसान की बात हो, चाहे महिला की बात हो, न्याय की बात हो,

व्यापार की बात हो, प्रशासन की बात हो, चाहे ममता हो, रमता हो, चाहे समता हो, सभी विषयों के बारे में प्रदर्शनी लगी है। हमारे देश में ऐसे नेतृत्व करने वाली महारानी थी। भारत नियम के कारण नहीं, बल्कि लंबी हमारी विरासत है। देश के लिए, जिन्होंने अपना जीवन दिया। उनमें एक महान विभूतिपुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कहना हैं कि अब हमें उनको प्रतिनिधित्व व सहभागिता देने में नहीं, बल्कि उनके नेतृत्व में कार्य करने की आदत डालनी चाहिए। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि लोकमाता अहिल्याबाई होलकर समरसता की साक्षात मूर्ति थीं। उन्होंने शासन करते हुए देश के अनेक धर्मस्थलों का जीर्णोद्धार कराया। उत्तर प्रदेश में भी उन्होंने अनेक स्थलों का जीर्णोद्धार कराया। महेश्वर में उनके समय में शुरू कराया गया साड़ी उद्योग आज भी प्रसिद्ध है। बिना अतिरिक्त कर लगाये खजाने में वृद्धि हो सकती है। भ्रष्टाचार मुक्त शासन हो सकता है। लोकमाता अहिल्याबाई होलकर ने कर दिखाया। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी ने कहा कि अपने को विकसित कहने वाले देशों में 19 वीं शताब्दी में महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिला। लेकिन महारानी अहिल्याबाई ने उत्कृष्ट शासन व्यवस्था का संचालन किया। अपने राज्य की सीमाओं के बाहर उन्होंने मंदिरों का निर्माण कराया। इस अवसर पर जल शक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह, भाजपा के प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह, एमएलसी अंगद सिंह, अवनीश सिंह व भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन भाजपा के प्रदेश महामंत्री व अभियान के प्रदेश संयोजक संजय राय ने किया।

घर-घर सिंदूर बांटने की मुहिम 'घटिया' राजनीति : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी ने भारतीय जनता पार्टी की घर-घर जाकर सिंदूर बांटने की मुहिम को 'घटिया' सियासत बताया है। पार्टी का कहना है कि बड़े-बड़े पोस्टर से मन नहीं भरा तो अब भाजपा घर-घर जाकर सिंदूर बांटने की राजनीति कर रही है। कांग्रेस मुख्यालय में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए पार्टी की नेता रागिनी नायक ने कहा कि सिंदूर का दुरुपयोग घटिया राजनीति है। यह बेहद शर्म की बात है कि अपनी राजनीतिक और कूटनीतिक विफलताओं को छुपाने के लिए मोदी सरकार मांग के सिंदूर को ढाल बनाना चाहती है। उन्होंने कहा कि सिंदूर भारत की नारी शक्ति की आन बान और शान है।उल्लेखनीय है कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को लेकर केंद्र सरकार महिलाओं को उपहार के स्वरूप में सिंदूर बांटने जा रही है। इसकी शुरुआत 9 जून को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरी बार शपथ लेने के दिन से शुरू होगी। इसका मकसद मोदी सरकार की उपलब्धियां को घर-घर तक पहुंचना है।

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में पकड़ा गया पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वाला युवक

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश पुलिस ने कांगड़ा जिला के देहरा से पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक की पहचान सुखाहर गांव के अभिषेक भारद्वाज (20) के रूप में हुई है। देहरा पुलिस उसे आज कोर्ट में पेश कर रिमांड की मांग करेगी। अभिषेक को हिरासत में लेकर लंबी पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया। देहरा एसपी मयंक चौधरी ने बताया कि अभिषेक भारद्वाज के मोबाइल फोन से कुछ संवेदनशील दस्तावेज और फोटो बरामद हुए हैं। डेटा को फॉरेंसिक लैब में भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद संदिग्ध गतिविधियों के कारण अभिषेक पर नजर रखी जा रही थी। आरोपित युवक ने कुबूल किया है कि वह सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाएं पाकिस्तान भेजता था। उन्होंने बताया कि आरोपित के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 152 बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि वह कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़ चुका है। देहरा पुलिस ने इसकी सूचना राज्य और केंद्र की खुफिया एजेंसियों की दी है।

डबल इंजन की सरकार में जिन्हें बिहार का विकास नहीं दिखता, वे चश्मा बदलवा लें : गिरिराज सिंह

पटना । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को बिहार की दो दिवसीय यात्रा पर पटना आने वाले हैं। पीएम मोदी के बिहार आगमन को लेकर भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं में गजब का उत्साह है। पीएम पटना में एक रोड शो में भी शामिल होंगे। इससे पहले केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार में जिन्हें बिहार का विकास नहीं दिखता, वे चश्मा बदलवा लें। पटना के रानी सती मंदिर में श्री विद्या त्रिकोटी कुमकुमार्चन महायज्ञ में पहुंचे केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि जो माताएं यहां उपस्थित हैं, सभी पीएम मोदी को 'ऑपरेशन सिंदूर' के लिए आशीर्वाद दे रही हैं। आतंकवाद के खिलाफ ऐसा ऑपरेशन कभी नहीं हुआ था। आज पीएम मोदी बिहार पधार रहे हैं। उन्होंने कहा कि बिहार में डबल इंजन की सरकार है। पीएम मोदी बिहार के विकास के लिए आते हैं। उनका मानना है कि बिहार के विकसित हुए बिना भारत विकसित नहीं होगा। जब से बिहार में डबल इंजन की सरकार है, प्रदेश में विकास हो रहा है। पीएम मोदी यहां कई योजनाओं की सौगात देंगे। इसी को तो विकास कहते हैं। उन्होंने कहा कि पहले बक्सर जाने में चार-पांच घंटे लगते थे, अब दो घंटे में लोग चले जा रहे हैं। सभी क्षेत्रों में विकास हुआ है। पहले लालू यादव भी पांच घंटे में बक्सर से पटना आते थे। उन्होंने कहा कि पीएम जितनी बार बिहार आते हैं, वह विकास में मील का पत्थर साबित होता है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि बिहार के लोग पीएम मोदी के स्वागत के लिए पलकें बिछाए बैठे हुए हैं। लाखों की संख्या में लोग उनका स्वागत करेंगे। रोड शो में लोग अपने प्रधानमंत्री का अभिवादन करेंगे। पीएम मोदी के स्वागत के लिए पटना तैयार है। लोजपा (रामविलास) के सांसद अरुण भारती ने कहा कि पीएम मोदी ने जिस तरह बिहार को अपने विकास के एजेंडे में रखा है और वे अपने वादों को जिस तरह पूरा करने का दायित्व निभा रहे हैं, उसी सिलसिले में वह गुरुवार को बिहार पहुंच रहे हैं। वह पटना हवाई अड्डे के नवनिर्मित टर्मिनल का उद्घाटन करेंगे और इसके बाद विक्रमगंज के कार्यक्रम में नवीनगर में एनटीपीसी के बनने वाले प्लांट का शिलान्यास करेंगे। इसके साथ ही कई और सौगातें भी देंगे। बिहार के विकास की गति के लिए कई और योजनाओं की घोषणा करेंगे।

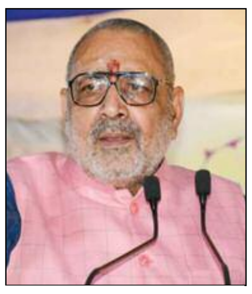

'लोग पीएम मोदी के स्वागत के लिए पलकें बिछाए बैठे हुए हैं। लाखों की संख्या में लोग उनका स्वागत करेंगे।'

पश्चिम बंगाल में पीएम मोदी की हुंकार, बोले-

'प्रदेश में मची है चीख पुकार, नहीं चाहिए निर्मम सरकार'

एजेंसी

अलीपुरद्वार । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार में एक जनसभा को संबोधित करते हुए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने टीएमसी को 'निर्मम सरकार' करार देते हुए कहा कि यह सरकार गरीबों और आम लोगों के हितों के खिलाफ काम कर रही है। पीएम मोदी ने यहां मंच से कहा कि बंगाल की जनता कह रही है कि 'मची है चीख पुकार, नहीं चाहिए निर्मम सरकार।' पीएम मोदी ने मुर्शिदाबाद और मालदा की घटनाओं का जिक्र करते हुए टीएमसी सरकार के समय में प्रदेश की कानून-व्यवस्था को लेकर सवाल उठाए। जनसभा के दौरान मंच से पीएम मोदी ने अलीपुरद्वार और कूचबिहार में सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन प्रोजेक्ट की आधारशिला रखी। इस परियोजना से 2.5 लाख से अधिक घरों में पाइपलाइन के जरिए सस्ती और सुरक्षित गैस आपूर्ति होगी। इससे न केवल सिलेंडर खरीदने की परेशानी खत्म होगी, बल्कि परिवारों को स्वच्छ ऊर्जा भी मिलेगी। पीएम ने इसे सरकार की डोरस्टेप डिलीवरी का उदाहरण बताया। आयुष्मान योजना का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना के तहत देशभर में करोड़ों लोगों को मुफ्त इलाज मिल रहा है, जिसमें 70 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग भी शामिल हैं। लेकिन पश्चिम बंगाल में टीएमसी सरकार ने इस योजना को लागू नहीं होने दिया, जिसके कारण राज्य के लोग इस लाभ से वंचित हैं। इसके अलावा, केंद्र सरकार की गरीबों को पक्का मकान देने की योजना का जिक्र करते हुए पीएम ने आरोप लगाया कि टीएमसी के लोग गरीबों से 'कट मनी' वसूल रहे हैं, जिसके कारण लाखों परिवारों को घर नहीं मिल पा रहा। पीएम ने विश्वकर्मा योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि इस योजना के तहत देशभर में लाखों लोगों को प्रशिक्षण और आर्थिक मदद दी जा रही है। लेकिन पश्चिम बंगाल में टीएमसी सरकार ने आठ लाख आवेदनों को लटका रखा है, जिससे यह योजना भी यहां लागू नहीं हो पा रही। पीएम ने टीएमसी सरकार पर शिक्षकों और बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का भी आरोप लगाया।

पीएम ने कहा कि टीएमसी ने चाय बागान में काम करने वाले श्रमिकों को भी नहीं बख्शा।

यूपी सरकार और ऑस्ट्रेलिया की मोनाश यूनिवर्सिटी के बीच एमओयू

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक उत्कृष्टता से जोड़ते यूपी सरकार और ऑस्ट्रेलिया की प्रतिष्ठित मोनाश यूनिवर्सिटी के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए हैं। यह एमओयू प्रदेश के बेसिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं अध्यापनरत शिक्षकों के लिए शोध-अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता को एक नई ऊँचाई देगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार शिक्षा को केवल डिग्री अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि राज्य के समग्र विकास की धुरी मानती है। यह साझेदारी राज्य के शिक्षा तंत्र में गुणवत्ता, नवाचार और वैश्विक दृष्टिकोण का समावेश करेगी और युवाओं को विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने इस एमओयू को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भावना के अनुरूप बताते हुए कहा कि यह बहुआयामी अधिगम, कौशल विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को गति देगा। उन्होंने वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी के साथ प्रदेश की पूर्व सहभागिता का उल्लेख करते हुए कहा कि अब

मोनाश यूनिवर्सिटी के साथ यह गठबंधन शिक्षा के वैश्विक मानकों की ओर एक और बड़ा कदम है। इस सहयोग का केंद्र गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय होगा जो इस साझेदारी को धरातल पर उतारने में अहम भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री ने विश्वविद्यालय के कुलपति को इस उत्तरदायित्व का सफल निर्वहन सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया।

झारखंड के पलामू और लातेहार में दो सड़क हादसों में छह लोगों की मौत, 11 घायल

टक्कर के बाद डीजे लदा वाहन मौके से फरार हो गया।

एजेंसी

पलामू । झारखंड में पलामू और पड़ोस के लातेहार जिले में दो अलग-अलग सड़क हादसों में छह लोगों की मौत हो गई, जबकि 15 से अधिक लोग घायल हो गए। दोनों हादसे कुछ घंटे के अंतराल पर हुए हैं। पहली घटना पलामू जिला अंतर्गत तरहसी थाना क्षेत्र के तरहसी-पदमा मेन रोड पर बुधवार की देर रात हुई। मनातू थाना क्षेत्र से बारात लेकर जा रही एक पिकअप वैन और डीजे साउंड सिस्टम से लदी गाड़ी में बासदेव तिरंगा गांव के बीच आमने-सामने की टक्कर में चार बच्चों की जान चली गई। जबकि, 11 लोग बुरी तरह जख्मी हो गए।सभी घायलों को इलाज के लिए मेदिनीनगर स्थित मेदिनी राय मेमोरियल कॉलेज

हॉस्पिटल में दाखिल कराया गया है। हादसे की वजह से शादी की खुशियां मातम में बदल गईं। बताया गया कि मनातू थाना के पसिया चुनका गांव निवासी शिवनाथ सिंह चेरो के पुत्र की बारात लेस्लीगंज प्रखंड में बोहिता गांव जा रही थी। बारातियों को ले जा रही पिकअप वैन में 15 लोग सवार थे। इसी दौरान एक मोड़ पर विपरीत दिशा से आ रही डीजे साउंड सिस्टम लदी दूसरी पिकअप वैन के साथ आमने-सामने की टक्कर हो गई। टक्कर के बाद बारातियों से लदी पिकअप गाड़ी पलट गई और उसके नीचे दबकर दो बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई। चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग दौड़े। पुलिस भी सूचना पाकर मौके पर पहुंची। सभी घायलों को तरहसी स्थित स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद सभी को मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया। यहां इलाज के दौरान दो अन्य बच्चों ने दम तोड़ दिया। मृतकों में मनातू निवासी 15 वर्षीय बच्चू कुमार, 14 वर्षीय चंदन कुमार यादव, मृतक दूल्हे का चचेरा भाई और एक अन्य बच्चा शामिल हैं।

सिक्किम राज्य की स्वर्ण जयंती पर 50 रुपये का चांदी का सिक्का और डाक टिकट जारी

एजेंसी

गंगटोक। सिक्किम के राज्यपाल ओम प्रकाश माथुर और मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने गुरुवार को राजधानी के पाल्जोर स्टेडियम में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से 50 रुपये का चांदी का सिक्का और एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। इस मौके पर लोकसभा सांसद डॉ. इंद्रहांग सुब्बा और राज्यसभा सांसद डीटी लेप्चा भी मौजूद थे। सिक्किम राज्य की स्थापना की स्वर्ण जयंती पर जारी स्मारक डाक टिकट में सिक्किम की प्राकृतिक भव्यता, सांस्कृतिक समृद्धि और पर्यावरण जागरूकता का सार समाहित है। स्मारक डाक टिकट और चांदी के सिक्के का अनावरण सिक्किम की लोकतांत्रिक एकीकरण, सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक-आर्थिक विकास की पांच दशक की यात्रा को दर्शाता है। इस टिकट में सिक्किम के खूबसूरत पहाड़ों, पवित्र पर्यावरण और इसके लोगों की विविधता के प्रतीकात्मक

तत्व शामिल हैं, जो उस राज्य की भावना को दर्शाते हैं। कार्यक्रम में शुद्ध चांदी (99.9फीसदी) से बना 40 ग्राम वजन का 50 रुपये का स्मारक सिक्का भी जारी किया गया। यह सिक्का भारत सरकार की कोलकाता टकसाल में ढाला गया है तथा गैर-परिचालित कानूनी टेंडर के रूप में जारी किया गया है। यह सिक्का सिक्किम के एक हिमालयी राज्य से लोकतंत्र, सद्भाव और विकास पर आधारित एक प्रगतिशील भारतीय राज्य में परिवर्तन का प्रतीक है। सिक्के और डाक टिकट दोनों का लोकार्पण सिक्किम की एकीकरण, लचीलेपन और प्रगति की प्रेरक कहानी के प्रति श्रद्धांजलि है।

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर एक न एक दिन भारत का हिस्सा होगा : राजनाथ

'पीओके में रहने वाले हमारे भाइयों की स्थिति वीर योद्धा महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह जैसी'

एजेंसी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक बार फिर देश को भरोसा दिलाया है कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर एक न एक दिन भारत का हिस्सा होगा। पीओके का भारत में एकीकरण इस देश की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक समृद्धि पर निर्भर करता है। पीओके में रहने वाले अधिकतर लोग भारत से गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं। कुछ ही लोग हैं, जिन्हें गुमराह किया गया है। पीओके में रहने वाले हमारे भाइयों की स्थिति वीर योद्धा महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह जैसी है। उन्होंने कहा कि भारत हमेशा दिलों को जोड़ने की बात करता है और हमारा मानना है कि प्रेम, एकता और सच्चाई के मार्ग पर चलते हुए वो दिन दूर नहीं जब हमारा अपना हिस्सा पीओके वापस आएगा। रक्षा मंत्री गुरुवार को भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन-2025 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आतंकवाद का कारोबार चलाना प्रभावी लागत नहीं है, बल्कि उसकी एक भारी कीमत अदा करनी पड़ सकती है, इसका अंदाजा आज पाकिस्तान को हो चुका है। ऑपरेशन 'सिंदूर' के दौरान आतंकवादियों के खिलाफ भारत की रणनीति और प्रतिक्रिया दोनों को नया स्वरूप और पुनर्परिभाषित किया गया है। हमें पाकिस्तान के साथ अपनी सहभागिता और बातचीत के दायरे को फिर से जांचना है। उसके साथ अब जब भी बात होगी तो सिर्फ पीओके पर होगी। ऑपरेशन सिंदूर में पूरे देश की जनता ने 'मेक इन इंडिया' अभियान की सफलता को देखा-समझा और महसूस किया है। आज यह साबित हो चुका है कि मेक इन इंडिया भारत की सुरक्षा और समृद्धि दोनों के लिए जरूरी है। आपने देखा कि किस तरह हमने पहले आतंकी ठिकानों और उसके बाद दुश्मन के सैन्य अड्डों, एयरबेस को तबाह किया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन 'सिंदूर' के दौरान करने को हम और भी बहुत कुछ कर सकते थे, परंतु शक्ति और संयम के साथ हमने दुनिया के सामने शानदार उदाहरण पेश किया।

आत्मनिर्भरता के बैनर के तले हम आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर डिफेंस और अंतरिक्ष आधारित सुरक्षा के क्षेत्र में भारत की पकड़ अब वैश्विक मंच पर मजबूती से स्थापित हो रही है।

'कांग्रेस के इतिहास को गलत तरीके से प्रस्तुत करेंगे, तो जवाब जरूर मिलेगा', उदित राज का थरूर पर पलटवार

एजेंसी

नई दिल्ली । कांग्रेस सांसद शशि थरूर और उदित राज के बीच लगातार वार-पलटवार देखने को मिल रहा है।

अब कांग्रेस नेता उदित राज ने शशि थरूर के 'ट्रोलर्स'कहने पर जवाब देते हुए कहा कि कांग्रेस के इतिहास को गलत तरीके से प्रस्तुत करेंगे तो उन्हें जवाब जरूर मिलेगा। इसके साथ ही उदित राज ने कांग्रेस सांसद थरूर से माफी की मांग भी की। उदित राज ने न्यूज एजेंसी आईएएनएस से गुरुवार को बातचीत करते हुए कहा कि ट्रोल्स का जवाब देना ही नहीं चाहिए, अपना स्तर उन्होंने खुद ही गिरा लिया है तो वह ट्रोल से क्यों परेशान हैं। आप पीएम मोदी की भक्ति करें, उससे कोई ऐतराज नहीं है, लेकिन आप यह बोल रहे हैं कि मोदी सरकार से पहले नियंत्रण रेखा यानी लाइन ऑफ कंट्रोल (एलओसी) को सेना ने कभी क्रॉस ही नहीं किया। उन्होंने सेना का अपमान किया।

उन्होंने आगे शशि थरूर पर निशाना साधते हुए कहा कि 1965 में लाहौर तक हमारी सेना घुसी थी, उसका भी अपमान किया। 1971 में पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए, उसका भी आपने अपमान किया। पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के कार्यकाल में छह बार सर्जिकल स्ट्राइक हुई। आपने उसका भी अपमान किया। आपका अपमान करने का क्या अधिकार है? मोदी जी का गुणगान करिए और अंग्रेजी लिखकर भाग नहीं सकते हैं। वह क्या लिखते हैं, इतनी अंग्रेजी सभी समझते हैं। उनके सामने विकल्प यही है कि वह गलती मान लें कि उनके स्टेटमेंट्स गलत हैं, वही एक रास्ता रह गया है।

प्राइवेट स्कूलों में फीस वृद्धि पर सुप्रीम कोर्ट का नोटिस, अभिभावकों की याचिका पर सुनवाई

एजेंसी

नई दिल्ली । दिल्ली के निजी स्कूलों में बेतहाशा फीस वृद्धि के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय और 'एक्शन कमेटी ऑफ अनएडेड रिकॉग्नाइज्ड प्राइवेट स्कूल्स' को नोटिस जारी किया है। यह कार्रवाई अभिभावकों की ओर से दायर एक याचिका के बाद की गई, जिसमें दिल्ली हाई कोर्ट के दो फैसलों को चुनौती दी गई है। इन फैसलों में हाई कोर्ट ने कहा था कि सरकारी जमीन पर बने निजी स्कूलों को ट्यूशन फीस बढ़ाने के लिए शिक्षा निदेशालय की अनुमति की जरूरत नहीं है। पैरेंट्स एसोसिएशन की याचिका में कहा गया है कि हाई कोर्ट के 28 अप्रैल और 8 अप्रैल के आदेश, सुप्रीम कोर्ट के पुराने फैसलों के खिलाफ हैं। इन आदेशों के कारण दिल्ली के गैर-सहायता प्राप्त निजी स्कूल 100 प्रतिशत तक फीस बढ़ा रहे हैं। इससे अभिभावकों पर आर्थिक बोझ बढ़ा है और फीस न चुका पाने वाले छात्रों के खिलाफ स्कूल कार्रवाई कर रहे हैं। याचिका में दावा किया गया है कि इन आदेशों ने शिक्षा व्यवस्था में भ्रम की स्थिति पैदा कर दी है। अभिभावकों ने सुप्रीम कोर्ट से मांग की है कि हाई कोर्ट के इन आदेशों को रद्द किया जाए। साथ ही, उन्होंने अंतरिम राहत के तौर पर इन आदेशों के अमल पर रोक लगाने की अपील की है। याचिका में कहा गया है कि बिना किसी नियमन के फीस वृद्धि से गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों के बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ रहा है। अभिभावकों का कहना है कि स्कूलों की मनमानी को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप जरूरी है।

संक्षिप्त समाचार

आज 16 वें वित्त आयोग के माननीय अध्यक्ष डा अरविंद पनगढिया ने बाबा बैद्यनाथ मंदिर में की पूजा अर्चना

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज 16 वें वित्त आयोग के माननीय अध्यक्ष डा अरविंद पनगढिया ने सपरिवार बाबा बैद्यनाथ की पूजा-अर्चना कर बाबा का आशीर्वाद लिया। इससे पूर्व तिर्थ पुरोहितों द्वारा मंत्रोच्चार के साथ उन्हें संकल्प कराया गया। इसके पश्चात अध्यक्ष द्वारा द्वादश ज्योतिर्लिंग का जलाभिषेक कर पूजा-अर्चना की गयी। इसके अलावा पूजा अर्चना पश्चात मौके पर उपस्थित उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी नमन प्रियेश लकड़ा ने माननीय अध्यक्ष को भेंट स्वरूप स्मृति चिन्ह व बाबा बैद्यनाथ का प्रसाद प्रदान किया। इस मौके पर उपरोक्त के अलावा* पुलिस अधीक्षक अजित पीटर डुंगडुंग, अनुमंडल पदाधिकारी सह बाबा मंदिर प्रभारी रवि कुमार एवं संबंधित अधिकारी, दंडाधिकारी व पुलिस पदाधिकारी उपस्थित थे।

सुपर पी.के. क्लासेस के बच्चों ने मैट्रिक परीक्षा में लहराया परचम

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर शहर के रखिया मैं संचालित सुपर पी. के. क्लासेस के सत प्रतिशत बच्चों ने मैट्रिक परीक्षा में सफलता हासिल किया. जिनमें से अधिकांश ने प्रथम श्रेणी के साथ परीक्षा उत्तीर्ण किया. यहाँ के प्रथम टॉपर उदय कुमार अग्रवाल 93.80, द्वितीय टॉपर राजीव कुमार दास 93.40 थर्ड टॉपर मोहित शर्मा 92.40 पायल कुमारी 91.40 प्रतिशत अंक हासिल कर शहर का नाम रोशन किया. पत्रकारों से बात करते हुए कोचिंग के संचालक पप्पू कुमार तथा प्रमोद अग्रवाल ने बताया कि यह कोचिंग 2015 से ताराबाद तथा रिखिया मे हमारी कोचिंग संचालित हो रही है और प्रारंभ से ही यहां के बच्चों ने मैट्रिक व इंटर की परीक्षा में सत प्रतिशत सफलता हासिल किया है तथा कइयों ने अच्छे अंक हासिल कर शहर का नाम रोशन किया है. यहां से पढ़कर निकले कई विद्यार्थी आज कई सरकारी नौकरियों में कार्यरत है. उन्होंने यह भी बताया कि हमारे यहां गरीब अनाथ तथा दिव्यांग बच्चों को बिल्कुल मुफ्त मैट्रिक इंटर की कोचिंग क्लास उपलब्ध कराया जाता है.

सबेजोर फ्यूचर स्किल क्लब पहाड़पुर मधुपुर में मातृ बैठक आयोजित

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक 29/05/2025 को सबेजोर फ्यूचर स्किल क्लब पहाड़पुर मधुपुर देवघर में मातृ बैठक आयोजित की गई जिसमें किशोरियों की माताएं, वार्ड, सहिया, सेविका, सहायिका तथा क्वेस्ट एलायंस टीम से शाहिद जी एवं सुरजीत जाना भी उपस्थित रहे। बैठक की शुरूआत किशोरियों द्वारा स्वागत गीत एवं परिचय सत्र से हुई। तत्पश्चात वार्ड सदस्य एवं सेविका ने किशोरियों के स्वास्थ्य एवं चल रही सभी सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी, साथ ही क्लब सत्र में बालिका चैंपियन करिश्मा द्वारा चल रहे सभी स्वरोजगार के बारे में बताया गया, साथ ही फेलो असित ने विद्यालय कार्यक्रम, डिजिटल लाइब्रेरी एवं क्लब सत्र के बारे में बताया। अंत में शाहिद जी ने मातृ बैठक के उद्देश्य पर चर्चा की तथा उपस्थित सभी माताओं को संदेश दिया कि माताएं निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनकर बच्चों के भविष्य निर्माण में अपनी भूमिका को मजबूत करें जमीनी स्तर पर कौशल आधारित शिक्षा के महत्व को समझें। इन कौशलों से बच्चे स्वतः ही देश के उज्ज्वल भविष्य में योगदान देंगे। इन शब्दों के साथ सभी को धन्यवाद ज्ञापन दिए और माताओं की बैठक समाप्त हुई।

जिला गोपनीय कार्यालय में भूमि संरक्षण योजनाओं की समीक्षा बैठक संपन्न

साहिबगंजतः जिला गोपनीय कार्यालय में उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में भूमि संरक्षण विभागान्तर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले में संचालित विभिन्न विकासात्मक योजनाओं जैसे तालाब निर्माण, प्रोकुलेशन टैंक, डिप बोरिंग एवं चेक डैम निर्माण की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की गई।उपायुक्त ने पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि योजनाओं के निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए एवं कार्य समयबद्ध तरीके से पूर्ण किया जाए। उन्होंने विशेष रूप से निमार्णाधीन तालाबों और प्रोकुलेशन टैंकों में भूमि विवाद की स्थिति को गंभीरता से लेते हुए ऐसे मामलों का त्वरित निष्पादन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि योजनाओं की निगरानी नियमित रूप से की जाए और प्रत्येक कार्यस्थल की भौतिक जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए ताकि योजनाओं के प्रभाव का सही मूल्यांकन किया जा सके।बैठक में भूमि संरक्षण पदाधिकारी राहुल गुप्ता उपस्थित थे।

डीसी ने दमदमा पंचायत सचिवालय, धुमकुड़िया भवन, प्रखंड पंचायत संसाधन केंद्र का किया निरीक्षण

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ डीसी मनीष कुमार के द्वारा महेशपुर प्रखंड अंतर्गत दमदमा पंचायत सचिवालय का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पंचायत सचिवालय खुला पाया गया एवं संबन्धित मुखिया, पंचायत सचिव, जेई, भीएलई उपस्थित पाए गए। उपायुक्त के द्वारा पंचायत सचिवालय में उपलब्ध पंजियों, पंचायत सुदृढ़ीकरण, पंचायत ज्ञान केंद्र का उपयोगिता प्रमाणपत्र, किए जा रहे कार्यों आदि का निरीक्षण किया गया। उन्होंने भस्मक, हैंड वाश यूनिट, सेग्रीगेसन बीन, ज्ञान केन्द्र इत्यादि योजनाओं का भी निरीक्षण किया। उपायुक्त ने पंचायत सचिवालय में वाटर प्यूरीफायर जल्द से जल्द लगाने का निर्देश पंचायत सचिव शैलेश हांसदा को दिया। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि पंचायत भवन एक सरकारी पंचायत कार्यालय है और कार्यालय अवधि में किसी स्थिति में पंचायत भवन को बंद नहीं रखना है। इसके अलावा उपायुक्त श्री मनीष कुमार ने प्रखंड पंचायत संसाधन केंद्र महेशपुर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने बीडीओ को जल्द से जल्द बीपीआरसी केंद्र के संचालित कराने का निर्देश दिया। कहा कि पंचायत प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण समयबद्ध एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही रोलाग्राम पंचायत के महेशगड़िया ग्राम में धुमकुड़िया भवन का निरीक्षण कर आवश्यक व उचित दिशा निर्देश दिया। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी, बीपीआरओ, प्रखंड कल्याण पदाधिकारी, बीपीओ, एई, जेई, प्रखंड समन्वयक समेत अन्य उपस्थित थे।

प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा विभिन्न योजनाओं का निरीक्षण किया गया

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःमहेशपुर प्रखंड अतर्गत पंचायत जयनगरा में प्रखंड विकास पदाधिकारी सिद्धार्थ शंकर यादव द्वारा विभिन्न योजनाओं यथा अबुआ आवास, मनरेगा के तहत बिरसा हरित ग्राम योजना एवं 15 वें वित आयोग अन्तर्गत जलमीनार का निरीक्षण किया गया। साथ ही नसीपुर आंगनबाड़ी का विधिवत उद्घाटन किया एवं बच्चों की पढ़ाई से संबंधित जानकारी सेविका से ली और आवश्यक दिशा-निर्देश दिया मौके पर बीपीओ, प्रखंड समन्वयक, कनीय अभियंता, मुखिया,पंचायत सचिव, रोजगार सेवक एवं सेविका उपस्थित थे।

16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ अरविंद पनगढ़िया की अध्यक्षता में बैठक आहूत

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक 29.05.2025 को 16वें वित्त आयोग के माननीय अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगढ़िया की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन परिसदन के सभागार में किया गया। इस दौरान उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी नमन प्रियेश लकड़ा ने माननीय अध्यक्ष एवं 12 सदस्यों की टीम एवं संथाल परगना के सभी जिलों के जनप्रतिनिधियों का स्वागत किया। इसके अलावा बैठक के दौरान 16वें वित्त आयोग के एजेंडा से सभी को अवगत कराया। साथ ही वित्त आयोग की टीम देवघर, दुमका, जामताड़ा, साहिबगंज, गोड्डा व पाकुड़ जिले के जिला परिषद अध्यक्ष व प्रमुख, स्थानीय नगर निकाय के प्रशासकगण द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों की जरूरत और आवश्यकता से अवगत कराया। आगे बैठक में संथाल परगना के विकास योजनाओं समेत कई महत्वपूर्ण विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक के पश्चात उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा ने माननीय अध्यक्ष व सभी सदस्यों को स्मृति चिन्ह और शॉल प्रदान किया। इस दौरान उपरोक्त के अलावा* अनुमंडल पदाधिकारी रवि कुमार, एनी जोर्जे मैथ्युज मेम्बर, डॉ मनोज पंडा मेम्बर, पुष्पांजली पंडा स्पॉस ऑफ मेम्बर, डॉ सॉम्याकांति घोष मेम्बर, रित्विक पांडे सेक्रेटरी, डॉ प्रशांत कुमार पंडा इकॉनोमिक एडवाईजर, अलिवा दीपाली पांडे स्पॉस ऑफ इकॉनोमिकएडवाईजर, कुमार विवेक पीएस टू चेयरमैन, प्रिया सर्राफ ज्वाइंट डायरेक्टर, मानसी गुप्ता उप निदेशक, शीखा सिंह उप निदेशक, कोमल सिंह प्राईवेट सेक्रेट्री, श्याम लाल जुनियर सेक्रेटेरिएट अस्सिटेंट एवं संथाल परगना के सभी जिला परिषद अध्यक्ष, प्रमुख, जिला पंचायती राज पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

मालदा मंडल की आरपीएफ ने ब्रह्मपुत्र मेल से जब्त की 8,800 मूल्य की अवैध शराब

साहिबगंज:

पूर्व रेलवे के मालदा मंडल अंतर्गत रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने एक महत्वपूर्ण कार्रवाई करते हुए ट्रेन संख्या 15658 ब्रह्मपुत्र मेल से अवैध शराब की 80 बोतलें जब्त की हैं। जब्त की गई शराब की अनुमानित कीमत 8,800 बताई गई है।इस छापेमारी को क्राइम प्रिवेंशन एंड डिटेक्शन स्क्वाड (उढञ) एवं आरपीएफ पोस्ट बरहरवा के अधिकारियों एवं जवानों की संयुक्त टीम द्वारा अंजाम दिया गया। प्राप्त विश्वसनीय सूचना के आधार पर यह विशेष अभियान चलाया गया, जिसकी निगरानी निरीक्षक संजीव कुमार, आरपीएफ/बरहरवा के नेतृत्व में की गई।जांच के दौरान अवैध शराब की 80 बोतलें ट्रेन में बिना दावे के बरामद की गईं। बरामद सामग्री को आरपीएफ द्वारा जब्त कर लिया गया है तथा आबकारी विभाग, साहिबगंज को मामले की जानकारी देकर आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए सौंप दिया गया है।रेलवे सुरक्षा बल ने एक बार फिर यह साबित किया है कि वह न केवल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रतिबद्ध है, बल्कि रेल मार्ग के माध्यम से होने वाली अवैध गतिविधियों की रोकथाम में भी पूरी तरह सतर्क है।आरपीएफ की यह कार्रवाई न केवल अवैध कारोबारियों के लिए एक सख्त संदेश है, बल्कि आम यात्रियों को यह भरोसा भी दिलाती है कि भारतीय रेलवे में उनकी यात्रा सुरक्षित और संरक्षित है।

माध्यमिक शिक्षक संघ के द्वारा डीसी/एसपी को शॉल, बुके देकर आभार व सम्मानित किया गया

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ जिले का वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2025 का परिणाम पुरे राज्य स्तर में दूसरे स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में गुरुवार को समाहरणालय कार्यालय कक्ष में पाकुड़ के झाड्ड राड्ड माध्यमिक शिक्षक संघ के शिक्षकों द्वारा जिले के उपायुक्त महोदय एवं पुलिस अधीक्षक महोदय को शॉल, बुके देकर आभार व सम्मानित किया गयो इस अवसर पर उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक के द्वारा शिक्षक संघ से आपसी संवाद किया गया. आगामी वर्ष पाकुड़ जिला का परीक्षा का परिणाम को राज्य में प्रथम स्थान तक पहुँचाने के लिए शिक्षक और लगन व मेहनत के साथ शिक्षक समर्पित भाव से अपना दायित्व ईमानदारी पूर्वक निर्वहन करें इस अवसर पर शिक्षक संघ ने डीईओ मैडम को भी सम्मानित किया. मौके पर संघ के अध्यक्ष कौसर कबीर, सचिव नमिता त्रिवेदी, संयुक्त सचिव विजय कुमार भंडारी, एवं शमशेर आलम, कुणाल कश्यप, हिफजूर रहमान, राजू नंदन, सूजॉय दास, प्रियंका चौबे, मो लेनिन, तारिक अनवर,फजल अंसारी, शफीऊर रहमान, बाबुल अली इत्यादि शिक्षक /शिक्षिका उपस्थित रहे.

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित

साहिबगंज:

उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में गोपनीय कार्यालय में सामाजिक सुरक्षा कोषांग अन्तर्गत संचालित विभिन्न पेंशन योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना, दिव्यांग पेंशन योजना, मुख्यमंत्री मंईया सम्मान योजना, राज्य वृद्धावस्था पेंशन योजना, आदिम जनजाति पेंशन योजना, निराश्रित महिला सम्मान पेंशन योजना, स्वामी विवेकानंद निःशक्त स्वावलंबन प्रोत्साहन योजना तथा एचआईवी/एड्स पीड़ितों के लिए संचालित पेंशन योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई।बैठक के दौरान उपायुक्त ने पेंशनधारियों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सभी योजनाओं के लाभुकों को प्रत्येक माह की निर्धारित तिथि पर पेंशन प्राप्त हो, यह सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने मई माह तक भुगतान की स्थिति की जानकारी लेते हुए लंबित मामलों को शीघ्र निष्पादित करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया।बैठक में पंचायती राज पदाधिकारी-सह-सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा कोषांग प्रभारी अनिल कुमार सहित संबंधित विभागों के अन्य उपस्थित थे।

साहिबगंज सदर प्रखंड क्षेत्र का राजमहल विधायक ने किया दौरा, समस्याओं का जल्द होगा समाधान

मंडरो:

राजमहल विधायक ताजउद्दीन उर्फ एमटी राजा सदर प्रखंड क्षेत्र का दौरा कर ग्रामीणों की समस्याओं से हुए अवगत। वही विधायक ने कहा कि ग्रामीणों की जो भी समस्या है सभी को दूर किया जाएगा। इस दौरान विधायक के साथ झामुमो जिलाध्यक्ष अरुण कुमार सिंह मौजूद थे। मिली जानकारी के अनुसार राजमहल विधायक सदर प्रखंड क्षेत्र के छोटीकोदरजन्ना, डिहारी , महादेवगंज,हाजीपुर भीठ्ठा व हाजीपुर दियारा क्षेत्र का भ्रमण कर ग्रामीणों की समस्याओं से हुए अवगत। सदर प्रखंड में क्षेत्र भ्रमण के दौरान ग्रामीणों ने बिजली, पानी,शौचालय, सड़क , पेंशन योजना एवं सदर प्रखंड के कई इलाकों में निवास प्रमाण पत्र एवं जाति प्रमाण पत्र निर्गत नहीं होने की समस्या से विधायक को अवगत कराया गया ।राजमहल विधायक ने कहा कि क्षेत्र पिछड़ापन का शिकार है जो दुर्भाग्यपूर्ण है. जनहित के सभी समस्याओं का निदान किया जाएगा. बिजली, पानी, सड़क ,शौचालय मूलभूत समस्या है इसका त्वरित समाधान किया जाएगा. सदर प्रखंड मुख्यालय में स्वयं एवं उनके प्रतिनिधि व पार्टी पदाधिकारी के माध्यम से ग्रामीणों की समस्या को सुनकर संज्ञान में लेते हुए त्वरित समाधान की दिशा में पहल की जाएगी।मौके पर केंद्रीय समिति सदस्य संजय कुमार मिश्रा उर्फ बबलु मिश्रा,विधायक प्रतिनिधि मो मारूफ, अमरदीप सिंह, राजू अंसारी,मुजम्मिल हक, यारानुल हक उर्फ गोले, मो जाबिर,सिद्दीक शेख, सहित अन्य झामुमो कार्यकर्ता मौजूद थे।

पाकुड़ की कमान अब नारी शक्ति के हाथ, निधि द्विवेदी ने संभाली जिम्मेदारी

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ः पाकुड़ को दो दशक बाद एक बार फिर महिला एसपी मिली हैं। 2013 बैच की तेजतर्रार आईपीएस अधिकारी निधि द्विवेदी ने जिले की नई पुलिस कप्तान के रूप में पदभार ग्रहण किया। उन्होंने निवर्तमान एसपी प्रभात कुमार से चार्ज लिया, जिनकी नई पदस्थापना धनबाद एसएसपी के रूप में हुई है।पदभार ग्रहण करने के बाद निधि द्विवेदी ने पत्रकारों से बातचीत में भावनात्मक शब्दों में अपनी प्राथमिकताओं को साझा किया। उन्होंने कहा,मैं पाकुड़ के लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की पूरी कोशिश करूंगी। यह मेरी प्राथमिकता होगी कि आम जनता को बिना कारण थानों के चक्कर न लगाने पड़ें। भयमुक्त वातावरण देना मेरी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी होगी।उन्होंने यह भी कहा कि पाकुड़ के लोग पुलिस से क्या अपेक्षाएं रखते हैं, उसी के अनुरूप कार्य योजना तैयार की जाएगी ताकि पुलिस-जन सहयोग और अधिक मजबूत हो।

उत्पाद विभाग की छापामारी में 06.39 लिटर विदेशी शराब बरामद

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ गुरुवार को उत्पाद विभाग की टीम ने सिमलोंग ओपी थानान्तर्गत धर्मपुर बंगला स्थित राहुल कुमार भगत के घर की छापामारी की गई। छापामारी के दौरान 06.39 लिटर अवैध विदेशी शराब बरामद कर अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। साथ ही अग्रेत्तर कार्रवाई की जा रही है। उत्पाद अधीक्षक आशुतोष कुमार ने बताया कि उत्पाद विभाग की ओर से अवैध शराब की बिक्री और निर्माण के खिलाफ सघन अभियान चलाया जा रहा है। जहां भी शराब की अवैध चुलाई या बिक्री की सूचना मिलेगी, वहां त्वरित कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस तरह के अवैध कारोबार को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वहीं अवर निरीक्षक, उत्पाद विक्रम कुमार साह ने आमजनों से अपील की है कि वे ऐसे अवैध कार्यों की सूचना तुरंत प्रशासन को दें, ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके और समाज को नशे की गिरफ्त में जाने से रोका जा सके।

पटना में पीएम मोदी का रोड शो, ऑपरेशन सिंदूर की गूंज, लोगों ने की फूलों की बारिश

भाजपा नेता राकेश सिंह ने सारण के कार्यकर्ता के साथ नरेंद्र मोदी का जोरदार अभिनन्दन किया

पटना , ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ऑपरेशन सिंदूर के बाद बिहार के दो दिवसीय दौरे पर हैं। राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटना एयरपोर्ट पर उनका स्वागत किया। पीएम मोदी ने पटना में रोड शो किया। फिर पार्टी ऑफिस में बीजेपी नेताओं से मिले। वो पटना एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन भी किया। बिहटा एयरपोर्ट का शिलान्यास किया। इसके बाद वो रोहतास में शुक्रवार को एक जनसभा को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सिंदूर ऑपरेशन के सफलता पर सेना के सम्मान में पटना में तिरंगा यात्रा में बेली रोड अभिलेख भवन के सामने छपरा जिला के आवंटित स्थल पर बिहार सरकार मंत्री मंटू सिंह जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह और भाजपा

नेता प्रदेश कार्य समिति सदस्य राकेश सिंह ने सारण के हजारो देव तुल्य कार्यकर्ता के साथ उनका पटना मे जोरदार अभिनन्दन किया इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष निरंजन शर्मा बिनोद सम्राट मंडल अध्यक्ष रामानंद सिंह भूलन जी मंटू बाबा मिथलेश मांझी अजय नाथ पूरी गया सिंह पवन सिंह संतोष शर्मा मोनू सिंह सुमंत बाबा अमन तिवारी छोटे बाबू चंदन सिंह विकास सिंह मनोज ठाकुर सरवन राम युगल किशोर जी धर्मेंद्र चौहान संजय गिरी मनीष गुप्ता जीतेन्द्र गिरी जिला उपाध्यक्ष अणु सिंह गायत्री देवी सहित हजारो लोग उपस्थित थे इस कार्यक्रम के लिए कार्यकर्त्ता से बढ़ चढ़ कर भाग लेने के लिए सांसद राजीव प्रताप रूडी और बिहार सरकार मंत्री मंटू सिंह ने भी लोगो से आने का आग्रह किया था जिससे प्रधानमंत्री का हौसला बढेगा।

संक्षिप्त समाचार

पाकुड़ जिला में बाल श्रम रोकने हेतु श्रम विभाग के द्वारा बाल श्रम विमुक्ति एवं जागरुकता अभियान चलाया गया

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ गुरुवार को बाल श्रम रोकने हेतु श्रम विभाग के द्वारा बाल श्रम विमुक्ति एवं जागरुकता अभियान चलाया गया। यह अभियान मालपहाड़ी रोड पाकुड़ में कुल 22 विभिन्न प्रतिष्ठान गैरेज, होटल इत्यादि की जाँच की गई एवं बाल श्रम से कार्य नही कराने हेतु जागरुक किया गया एवं अभियान के द्वारा सभी प्रतिष्ठानों में धारा-12 क के तहत सूचना प्रदर्शित कराई गई। श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी श्री गिरीश चन्द्र प्रसाद ने बताया कि किसी भी प्रतिष्ठान में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का एवं खतरनाक नियोजन में 14-18 वर्ष तक के बच्चों का नियोजन प्रतिषेधित है, उल्लंघन की स्थिति में बीस हजार रुपये से पचास हजार रुपये तक का जुर्माना अथवा 6 माह से 2 वर्ष तक कारावास या दोनो हो सकता है। इस अभियान में जनलोकल्याण परिषद के प्रोजेक्ट इंचार्ज, चाइल्ड लाईन के सदस्य, कैलाश सत्यार्थी फाउंडेशन के सदस्य एवं अन्य कर्मी शामिल थे।

जिले के विभिन्न प्रखंड में आयोजित आयुष जांच शिविर में 160 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:अमड़ापाड़ा प्रखंड के शामपुर एवं आंगनबाड़ी अमड़ापाड़ा, हिरणपुर प्रखंड के शिवनगर, पाकुड़िया प्रखंड के फुलझिंझरी एवं पाकुड़ प्रखंड के लखनपुर में आयुष विभाग की ओर से गुरुवार को आयुष कैंप लगाकर कुल 160 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक दवा दिया गया। डॉ० मिथलेश सिंह, डॉ अमरेश कुमार, डॉ कुलेश कुमार, डॉ बीरेंद्र कुमार विश्वकर्मा एवं सौरभ विश्वास ने बताया की इस कैंप में आज रक्तचाप, मधुमेह, जॉइंट पेन, गठिया, बच्चों से संबंधित आदि रोगों का जांच निःशुल्क किया गया। साथ ही सभी को मुफ्त दवा भी दी गई। वहीं शिविर में आने वाले मरीजों को शुगर, ब्लड प्रेशर का भी जांच की गई।

तक्षशिला इंस्टीट्यूट के लाड़लियो ने लहराया परचम

दिव्य दिनकर संवाददाता

चान्हो - प्रखंड अंतर्गत सोंस स्थित तक्षशिला के विद्यार्थियों ने दसवीं बोर्ड में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर इंस्टीट्यूट एवं अपने अभिभावक का नाम रोशन किया।तक्षशिला इंस्टीट्यूट के निदेशक अंगद कुमार सिंह ने सफल छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए बताया की जैक के दसवीं बोर्ड के घोषित परिणाम में कोचिंग का शत प्रतिशत परिणाम आया साथ ही साथ सभी छात्र प्रथम श्रेणी से उतरीण हुए। संजना कुमारी ने 92.20%, माही अनुष्का कुमारी ने 91.40% पलक कुमारी ने 89%, निशी कुमारी 83.8%,रीया कुमारी 75.6%, विदिया कुमारी 78.4%, राहुल कुमार ने 81%, मधुर नाथ मिश्रा 80.80%,नितेश भगत 75%,सोनु भगत 72% अन्य विद्यार्थियों ने भी संतोषजनक अंकों के साथ उत्तीर्ण किया हैं। लड़कियों ने दसवीं कक्षा के परिणाम में लड़कों से आगे बढ़कर सफलता का परचम लहराया है।

सड़क दुर्घटना मे एक बाइक सवार की मौत

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर- एनएच 75 में ब्राम्बे साईं अस्पताल के समीप गुरूवार को सड़क दुर्घटना में एक बाइक सवार की मौत हो गयी जबकि एक अन्य घायल हो गया. मृतक की पहचान चोरेया के उरांव टोली निवासी सुशील उरांव 38 वर्ष के रूप में की गयी है. वहीं चोरेया का ही संदीप उरांव 27 वर्ष घायल हुआ है. जिसका इलाज रेफरल अस्पताल में किया गया. घटना दोपहर करीब एक बजे की है. बताया जा रहा है कि सुशील उरांव व संदीप उरांव रातू के मखमन्दरो बाजार से अपनी केटीएम बाइक से चोरेया जा रहे थे. इसी क्रम में तेज रफ्तार के कारण उनकी बाइक सड़क के डिवाइडर से टकरा गई. और सुशील उरांव बाइक दूर फेंका गया. और सिर में लगी गंभीर चोट से मौके पर ही उसकी मौत हो गयी!

ब्रह्मर्षि सेवा अभियान बिहटा एयरपोर्ट का नामकरण स्वामी सहजानंद के नाम करने को लेकर चलाएगी आंदोलन

गया से अमरेंद्र कुमार दिव्य दिनकर के लिए।

स्वामी श्री सहजानंद के सामाजिक अतुल्नीय योगदान को देखते हुए ब्रह्मर्षि सेवा अभियान ने यह निर्णय लिया है की बिहटा में निमार्णाधीन हवाई अड्डे का नामकरण स्वामी सहजानंद जैसे कालजई व्यक्तित्व के नाम पर होना चाहिए यह बात मीडिया से मुखातिब होते हुए सेवा अभियान के राष्ट्रीय महासचिव महेश शर्मा ने बताया। बिहटा एयरपोर्ट का नाम स्वामी सहजानंद के नाम से नामकरण करने हेतु ब्रह्मर्षि समाज के युवा पीढ़ी के लोग आज आवाज उठाई है,जिस पर बिहार के शासन तंत्र को संजीदगी से ध्यान देने की जरूरत है। महेश शर्मा ने बताया कि इस तरह की मांग युवा पीढ़ी द्वारा करना अच्छा लगा क्योंकि स्वामी जी की सामाजिक आर्थिक बैचारिक योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। लेकिन अफसोस के साथ कहना है कि सत्ताधारी दल हो या विपक्ष के कोई भी राजनेता सासंद /पूर्व सांसद/बिधायक/पूर्व बिधायक,विधानपरिषद के सदस्य या पूर्व सदस्य, राज्यसभा के सांसद /पूर्व सांसद या राजनीतिक संगठन में पदधारक वर्तमान या पूर्व या किसी दल के बड़े राजनेता ने इसके लिए आवाज नहीं उठाई जो देश के पुरोधायों के प्रति इनकी बैचारिक बौनेपन को दशार्ता है। इन नेताओं की मानसिकता और इनकी राजनैतिक दुराग्रह पर शर्म आती है।यही राजनेता अगर समाज के किसी गाँव/परिवार में आ जाएं तो समाज के लोग हर तरह के स्वागत में तत्पर रहते हैं। लेकिन जहां समाज के मान सम्मान की बात आती हो तो ये समाज के वोट जाती के नाम पर लेने वाले लोग एक शब्द भी नहीं बोल पाते,या समाज का सामाजिक सरोकार से संबंधित कोई बैठक हो तो आने के लिए तैयार भी नही रहते हैं,जबकि समाज के लोग इनकी खातिरदारी माता पिता से भी ज्यादा सम्मान दे कर करते हैं। ऐसे राजनेताओं का सामाजिक वहिष्कार होना चाहिए जो समाज के लिए एक शब्द नहीं बोल पाते हैं। और अफसोस तब अधिक होता है कि सोशल मीडिया पर कुछ युवा इन जैसे नेताओं के साथ फोटो खिंचवाकर खूब उछलते है,और इन तथाकथित

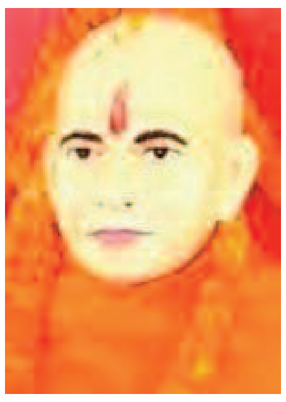

नेताओ के आगे पीछे भी करने लगते हैं जो एक सस्ती लोकप्रियता पाने का मात्र दिखावा भर होता है। इस विषय पर क्षोभ जाहिर करते हुए ब्रह्मर्षि सेवा अभियान के कोषाध्यक्ष संजय शर्मा महूयेद ने बताया कि दूसरे समाज के नेता अपनी जातीय मीटिंग में भी जाते हैं साथ ही अपनी शक्ति का उपयोग करते हुए सरकार से अपनी जातियों को जायदा सुविधा और भागीदारी भी दिलवाते हैं,और उसके लिए पुरजोर मांग भी उठाते हैं। लेकिन ब्रह्मर्षि समाज के लगभग सभी नेता समाज के निचे वाली पीढ़ी को उपेक्षित नजरिए से देखते हैं,इसलिए की कहीं ये पीढ़ी आगे न बढ़ जाये,और हमारी कुर्सी के लिए खतरा न बन जाए। महेश शर्मा ने बताया कि मैं समाज के लोग से आग्रह करता हूं कि जो बात मैंने उठाई है उसपर चिन्तन करे और समय आने पर एकजूटता का परिचय देते हुए संघर्ष करे,समाज के मान सम्मान के लिए। नहीं तो वर्तमान में जो स्थिति है इस समाज को राजनीति का बंधुआ मजदूर समझ लिया गया है। सभी राजनीतिक दल विपक्ष या विरोधी सभी समझते हैं कि ये जाती हमको वोट देगा नहीं जिसके कारण उपेक्षा करता है। और सत्ता पक्ष समझता है कि ये जाती जाएगा कहां जितना उपेक्षा करो वोट तो देगा ही चुकी ब्रह्मर्षि जाती के लोग अपने सशक्त विकल्प का निर्माण कर ही नहीं रहे हैं। जबकि ब्रह्मर्षि समाज आज भी सभी तरह का सामर्थ्य रखता है और सभी राजनीतिक दल ब्रह्मर्षि समाज के वोटरों से आर्थिक,मानसिक, शारीरिक मदद भी लेते हैं, लेकिन जब समाज के सिरमौर,महापुरुष को सम्मान देने दिलानी की बात आती है,तो ये जाती के नेता मुंह मोड़ लेते हैं, जो इनकी अवसरवादिता को दिखाता है।

रथ मेला मे रातु किला मे नि: शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन होगा

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची- छात्र क्लब चिकित्सक मंच (यूनिट,छात्र क्लब ग्रुप) की ओर से प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी रथ मेला (27 जून) के शुभ अवसर पर निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा।द्वारिका हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के डॉक्टर एस.के.निराला की पूरी टीम, सहित भारत विभूषण डॉक्टर राजेंद्र कुमार हाजरा,डॉक्टर आर.एन.प्रसाद,डॉक्टर अनुज कुमार पटेल,डॉक्टर बी.के.शर्मा आदि मरीजों की जांच करेंगें और परामर्श भी देंगे।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा जी करेंगे।शिविर का उद्घाटन रातु महारानी जी करेंगे।

एनटीपीसी के डीजीएम कुमार गौरव हत्याकांड मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

फिर कोई बड़ी घटना को देने वाला था अंजाम

कटकमदाग

देशभर में सनसनी फैलाने वाले एनटीपीसी डीजीएम कुमार गौरव हत्याकांड मामले में हजारीबाग के कटकमदाग पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने इस हत्याकांड में शामिल एक और आरोपी मुकेश साव उर्फ प्रभात जी उर्फ माईकल को गिरफ्तार किया है। आरोपी लातेहार जिले के चेडरा गांव, थाना बारियातु का रहने वाला है। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ अपराधी हथियार के साथ ग्राम बेस क्षेत्र में किसी बड़ी वारदात की तैयारी कर रहे हैं। सूचना के आधार पर कटकमदाग थाना प्रभारी पंकज कुमार के नेतृत्व में छापेमारी दल का गठन कर त्वरित कार्रवाई की गई। ग्राम बेस के पास से मुकेश साव को दबोच लिया गया। उसके पास से एक पिस्टल, दो जिंदा कारतूस, तीन मोबाइल फोन और एक चोरी की मोटरसाइकिल बरामद की गई है।

आरोपी के खिलाफ कई मामले दर्ज

पूछताछ में आरोपी ने 8 मार्च 2025 को फतहा चौक पर एनटीपीसी के डीजीएम कुमार गौरव की हत्या में संलिप्तता स्वीकार की है। उसने बताया कि उसी के इशारे पर अन्य अपराधियों ने इस जघन्य वारदात को अंजाम दिया था। आरोपी ने हजारीबाग और आसपास के क्षेत्रों में कई अन्य संगीन

अपराधों में शामिल होने की बात भी कबूल की है। उसके खिलाफ केरेडारी, कंटकमसांडी, गिद्दी, गिधौर, डोरंडा समेत कई थानों में आपराधिक मामले पहले से दर्ज हैं। पुलिस की इस कार्रवाई को मामले की बड़ी सफलता मानी जा रही है। बताते चलें कि 8 मार्च 2025 को एनटीपीसी के डीजीएम कुमार गौरव की फतहा चौक पर दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस घटना की चर्चा पूरे देश भर में हुई थी और हजारीबाग पुलिस के कार्य प्रणाली पर सवालिया निशान खड़ा हो गया था। हत्या के विरोध में कई दिनों तक एनटीपीसी ने कोयला उत्पादन भी ठप रखा था। जिसके बाद आला-अधिकारियों के द्वारा सुरक्षा का आश्वासन मिलने के बाद कोयला उत्पादन शुरू किया गया था। पहले भी इस मामले में कुछ अपराधियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। कटकमदाग थाना प्रभारी पंकज कुमार के नेतृत्व में छापेमारी की गई थी। थाना प्रभारी के द्वारा आरोपी की गिरफ्तारी की पुष्टि की है।

विश्व मासिक स्वच्छता दिवस को लेकर समाज कल्याण विभाग द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:ःबेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं अभियान के अंतर्गत विश्व मासिक स्वच्छता दिवस कार्यक्रम प्रखण्ड एवं आंगनबाड़ी केन्द्र स्तर पर आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत आंगनबाड़ी केन्द्र स्तर पर किशोरियों के बीच मासिक धर्म के बारे में जागरूकता बढाने एवं मासिक धर्म स्वच्छता से जुडी भ्रांतियों को दूर करने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम में बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, महिला पर्यवेक्षिका, आंगनबाडी सेविका/सहायिका, ग्रामीण महिलायें एवं किशोरियों ने भाग लिया। इस जागरूकता कार्यक्रम में माहवारी स्वच्छता प्रबंधन के उद्देश्य,माहवारी से जुड़े तथ्य, सुरक्षित माहवारी न होने के दुष्प्रभाव तथा बीमारी और संक्रमण का खतरा, किशोरी और महिलाओं के लिए माहवारी संबंधी चुनौतियां

समेत विभिन्न बिंदुओं पर जानकारी दी गई। इस दौरान बताया गया कि माहवारी स्वच्छता प्रबंधन कैसे स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही किशोरी, बालिकाओं तथा महिलाओं के साथ लिंग भेद से होने वाले सामाजिक दुष्परिणाम एवं माहवारी स्वच्छता प्रबंधन और लैंगिक समानता पर चर्चा की गई तथा सेनेटरी पैड और हाइजिन किट का वितरण किया गया। जिला समाज कल्याण पदाधिकारी बसंती ग्लाडिस बाड़ा ने कहा कि महिलाओं को मेंस्ट्रुएशन यानी माहवारी के दौरान स्वच्छता बरतने को लेकर जागरूक करने के उद्देश्य से हर साल दुनियाभर में 28 मई को माहवारी स्वच्छता दिवस (मेंस्ट्रुएशन हाईजीन डे) मनाया जाता है। इसको मनाने के पीछे का उद्देश्य लड़कियों या महिलाओं को पीरियड्स यानी महीने के उन पांच दिनों में स्वच्छता और सुरक्षा के लिए जागरूक करना तथा समुदाय में माहवारी स्वच्छता को बढ़ावा देना है। इस तरह के कार्यक्रम से महिलाओं और किशोरियों को माहवारी स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया, जिससे वे अपने स्वास्थ्य का बेहतर ध्यान रख सकें। इसके अलावा किशोरी और महिला के लिए माहवारी के दौरान रक्त को अवशोषित करने के लिए स्वच्छ और साफ अवशोषक (सेनेटरी पैड, सूती कपडा, तक पहुंच, संस्थान एवं समुदाय स्तर पर इसकी उपलब्धता में नियमितत्ता, साथ ही जितनी बार आवश्यक हो, गोपनीयता में बदलने हेतु व्यव (शौचालय), शारीरिक साफ सफाई हेतु जानकारी, हाथ धोने के लिए जल और साबुन की उपलब्धता तथा इस्तेमाल किये गए अवशोष सुरक्षित निपटान की सुविधाओं तक पहुंच, यह सभी मुख्य रूप से होना आवश्यक है।

वित्त रहित शिक्षा संयुक्त संघर्ष मोर्चा के प्रतिनिधि मंडल ने जैक अध्यक्ष से की मुलाकात,12 सूत्री मांगपत्र सौंपा

हुसैनाबादः कृष्णा यादव

हुसैनाबाद:वित्त रहित शिक्षा संयुक्त संघर्ष मोर्चा के 16 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने जैक अध्यक्ष डॉ नटवा हंसदा से मुलाकात की। सभागार में बुके, माला एवं अंग वस्त्र देकर उन्हें सम्मानित किया। स्वागत के बाद मोर्चा के सारी मांगों पर विस्तार से वार्ता हुई। मोर्चा के सभी चार घटक के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्याओं को बैठक में रखा। मोर्चा ने 12 सूत्री मांगों से संबंधित ज्ञापन भी दिया। जिसमें मुख्य रूप से शासी निकाय का गठन, प्रस्वीकृति के लंबित संचिताओं का अविलंब निष्पादन, शासी निकाय में परिषद प्रतिनिधि के मनोनयान, सेवा शर्त नियमावली के गठन, कॉलेज एवं स्कूल स्थापना सभी का - ऑनलाइन करने, परीक्षा में - रेगुलेशन फॉर एग्जामिनेशन के नियमों के अनुसार कार्य करने, पारिश्रमिक बढ़ाने, सीट वृद्धि के साथ अन्य सभी मांगों पर विस्तार से वार्ता हुई। वार्ता के बाद जैक अध्यक्ष ने कहा कि चुकी परीक्षा के कार्य चल रहे थे। इसलिए हम व्यस्त थे। अब मोर्चा द्वारा जो भी मांगे रखी गई है उस पर एक-एक कर निष्पादन किया जाएगा। सेवा शर्त नियमावली पर काम चल रहा है। अब परीक्षा में रेगुलेशन फॉर एग्जामिनेशन के अनुसार काम होगा। शासी निकाय का गठन हो या अन्य सभी मांगों पर हम समीक्षा कर जल्द से जल्द निर्णय लेंगे। आवश्यकता पड़ी तो मोर्चा के प्रतिनिधियों को भी बुलाएंगे। सारी समस्याओं का हम बैठकर बातचीत के द्वारा समाधान करेंगे। मोर्चा के प्रतिनिधियो ने अध्यक्ष का भव्य स्वागत किया। वार्ता काफी सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ।

टीआर कोचिंग क्लासेस हजारीबाग के छात्रों ने मैट्रिक परीक्षा में दिखाया दम, सभी छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण

हजारीबाग

बड़कागांव रोड स्थित टीआर कोचिंग क्लासेस हजारीबाग के छात्रों ने मैट्रिक परीक्षा 2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर कोचिंग संस्थान का नाम रौशन किया है। इस वर्ष संस्थान से कुल 27 विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया, और विशेष उपलब्धि यह रही कि सभी छात्र-छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। संस्थान का परीक्षा परिणाम सत-प्रतिशत रहा, जिससे विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों में खुशी की लहर दौड़ गई है। इस वर्ष की टॉपर बनीं आंचल कुमारी, जिन्होंने कुल 449 अंक 89.8 प्रतिशत प्राप्त कर संस्थान में सर्वोच्च स्थान हासिल किया। अन्य उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले छात्रों में सुरुचि कुमारी ने 417 अंक (83.4 प्रतिशत, कोमल कुमारी ने 403 अंक 80.6 प्रतिशत , निखिल कुमार ने 398 अंक 79.6 प्रतिशत, सरस्वती कुमारी ने 389 अंक 77.8 प्रतिशत, अंकित कुमार ने 364 अंक (72.8 प्रतिशत, मिताली राज ने 334 अंक 66.8 प्रतिशत, खुशी कुमारी ने 362 अंक 72.4 प्रतिशत, तथा अंशु कुमार ने 355 अंक 71 प्रतिशत अंक अर्जित किए। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक राजू पटेल, शिक्षक तिलक कुमार और सुधीर प्रसाद वर्मा ने सभी छात्रों को शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। टीआर कोचिंग क्लासेस ने पिछले सात वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाई है। संस्थान वर्तमान में मैट्रिक, इंटरमीडिएट आर्ट्स एवं साइंस की कक्षाएं संचालित कर रहा है। साथ ही कक्षा 11वीं आर्ट्स एवं साइंस की कक्षाएं आगामी 10 जून से प्रारंभ होंगी। प्रवेश प्रक्रिया जारी है। निदेशक ने कहा कि संस्थान आगे भी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और चरित्र निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन करता रहेगा।

एक चुटकी सिन्दूर की कीमत तुम क्या जानो नरेन बाबू !

>> विचार

> “ बीकानेर में उन्होंने ऐलान किया कि उनकी "रगों में लहू नहीं गर्म सिन्दूर बह रहा है। यह स्वयं मोदी द्वारा प्रधानमंत्री बनने के बाद जारी की गयी उनकी सबसे नयी ब्लड रिपोर्ट है। एक रिपोर्ट उन्होंने 1 सितम्बर 2014 को जारी की थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि वे गुजरात में जन्मे हैं, इसलिए उनके खून में व्यापार है। तब वे जापान के टोक्यो में थे। अगले ही दिन उन्होंने इसे थोड़ा अपडेट करते हुए बताया कि उनके खून में पैसा है। वहां से लौटकर एक ही महीने में तीसरी रिपोर्ट जारी करते हुए 29 सितम्बर 14 को उन्होंने कहा कि वे भारत में पैदा हुए हैं और उनके खून में लोकतंत्र है। बीच में एक बार फारुख अब्दुल्ला को जवाब देते हुए उन्होंने अपने खून में संविधान और सेकुलरिज्म दोनों के होने का ब्यौरा दिया। इस कड़ी में देखा जाए, तो खून में सिन्दूर और वह भी गरमागरम सिन्दूर का होना बाजार में एकदम नया है।

बादल सरोज

अंततः खुद उन्हीं ने इसका प्रमाण भी प्रस्तुत कर दिया है कि वे सचमुच में नॉन-बायोलॉजिकल हैं, अपौरुषेय हैं। सबसे पहली बार उन्होंने चौबीस के लोकसभा चुनाव के पहले चराचर मनुष्य जगत के समक्ष यह रहस्य उदघाटित किया था कि वे सामान्य प्राणियों की भांति जन्मे नहीं है, बल्कि स्वयं परमात्मा द्वारा भेजे गए हैं। एक घरेलू चैनल से बतियाते हुए उन्होंने बताया कि जब तक उनकी मां जिंदा थी, तब तक उन्हें लगता था कि उनका जन्म शायद बायोलॉजिकली हुआ है। बाकी बात खुद उन्ही के शब्दों में कि "माँ के जाने के बाद मैं इन सारे अनुभवों को जोड़ कर देखता हूँ तो मैं कंविंस हो चुका हूँ..., ग़लत हो सकता हूँ, लेफ्टिस्ट लोग तो मेरी धज्जियाँ उड़ा देंगे, मेरे बाल नोच लेंगे..., मगर तब भी मैं कंविंस हो चुका हूँ कि परमात्मा ने मुझे भेजा है। वो ऊर्जा बायोलॉजिकल शरीर से नहीं मिली। ...ईश्वर को मुझसे कुछ काम लेना है। ईश्वर ने स्वयं ने मुझे किसी काम के लिए भेजा है।" बात को और स्पष्ट करते हुए इसी रौ में उन्होंने आगे कहा था कि, "परमात्मा ने भारत भूमि को चुना। परमात्मा ने मुझे चुना।" पिछले गुरुवार को राजस्थान के बीकानेर में एक आमसभा में बोलते हुए उन्होंने यह भी बता दिया कि यह ऊर्जा उन्हें कहाँ से मिलती है, इसका स्रोत क्या है। बीकानेर में उन्होंने ऐलान किया कि उनकी "रगों में लहू नहीं गर्म सिन्दूर बह रहा है। यह स्वयं मोदी द्वारा प्रधानमंत्री बनने के बाद जारी की गयी उनकी सबसे नयी ब्लड रिपोर्ट है। एक रिपोर्ट उन्होंने 1 सितम्बर 2014 को जारी की थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि वे गुजरात में जन्मे हैं, इसलिए उनके खून में व्यापार है। तब वे जापान के टोक्यो में थे। अगले ही दिन उन्होंने इसे थोड़ा अपडेट करते हुए बताया कि उनके खून में पैसा है। वहां से लौटकर एक ही महीने में तीसरी रिपोर्ट जारी करते हुए 29 सितम्बर 14 को उन्होंने कहा कि वे भारत में पैदा हुए हैं और उनके खून में लोकतंत्र है। बीच में एक बार फारुख अब्दुल्ला को जवाब देते हुए उन्होंने अपने खून में संविधान और सेकुलरिज्म दोनों के होने का ब्यौरा दिया। इस कड़ी में देखा जाए, तो खून में सिन्दूर और वह भी गरमागरम सिन्दूर का होना बाजार में एकदम नया है। प्रसंगवश बता दें कि सिन्दूर लैड ऑक्साइड, सिंथेटिक डाई, सल्फ्यूरिक एसिड से बना मरकरी सल्फेट होता है, जिसमे लाल कच्चा सीसा घुला मिला होता है। विज्ञान के नियमों के हिसाब से यह मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। शरीर के भीतर इसकी ज़रा सी भी मात्रा यदि पहुँच गयी, तो वह उसके मानसिक संतुलन को हमेशा के लिए बिगाड़ सकती है। मगर विज्ञान के नियम-कानून हाड़-मांस के प्राणियों के लिए होते हैं ; नॉन बायोलॉजिकल लोगो के लिए नहीं ; मोदी जी के लिए तो कतई नहीं। मोदी जी पर तो राजनीति विज्ञान और सामाजिक बर्ताव के विज्ञान के नियम भी लागू नहीं होते। उनकी सबसे बड़ी विशिष्टता ही उनका प्रिडिक्टेबल यानि भविष्यवचनीय, सरल हिंदी में कहें तो उम्मीद के मुताबिक़ होना है। यहाँ उम्मीद सामान्य और सहज व्यवहार की अपेक्षा वाली उम्मीद नहीं है, उनसे की जाने वाली उम्मीद बिलकुल अलगई चीज होती है। यह संभावना नहीं, आशंका होती है। वे इस देश के, अब तक के, एकमात्र और दुनिया के उन गिने-चुने नेताओं में से एक हैं, जिनके लिए आपदा में अवसर होता है, हर आपदा एक अवसर होती है। ज्यादा सही यह होगा कि उनके लिए आपदाएं ही अवसर होती हैं। उनकी एक और विशेषता बरसों बरस, चौबीस घंटा, सातों दिन चुनाव के मोड में रहने की है झ इस हिसाब से आपदा देश और जनता के लिए जितनी बड़ी होती है, मोदी और उनके कुनबे के लिए चुनाव जीतने की संभावना बढ़ाने का उतना ही बड़ा अवसर होती है। उनकी तीसरी खासियत ध्रुवीकरण झ अपने ही देश की जनता के बीच द्वेष और विभाजन पैदा करने वाले ध्रुवीकरण -- की है। खून में खौलता हुआ सिन्दूर होने का दावा इन तीनों का गाढ़ा और सांघातिक मिश्रण है। एक ऐसा घोल है, जिसे देश पर हुए हमले और उसके शिकार हुए भारत के सैनिकों और नागरिकों की मौतों को चुनावी जीत का रास्ता हमवार करने की तारकोल के सड़क में बदलने में भी इन्हें न हिचक महसूस होती है, न लज्जा ही आती है। इस तरह की आई, लाई, बुलाई और कराई गयी आपदाओं को अवसर में बदलने का खून उनकी दाढ़ कई बार चख चुकी है। वर्ष 2002 के गोधरा और गुजरात दंगों का चुनाव और उसके लिए उन्मादी ध्रुवीकरण करने के लिया हुआ इस्तेमाल पुरानी बात नही है। 14 फरवरी 2019 को कश्मीर के पुलवामा में भारतीय सेना पर जघन्य आतंकी हमले की बात तो और भी ताज़ी है। इसके दोषियों, जिम्मेदारों, ऐसा अघटघटने के लिए उत्तरदायी गलतियों और चूकों और उनसे लिए जाने वाले सबकों के बारे में छह साल गुजर जाने के बाद भी कोई रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं हुई है। जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल सतपाल मलिक के अनेक खुलासों के बाद भी देश को कुछ नहीं बताया गया। जब इस हमले के 6 दिन भी नहीं गुजरे थे, तब जो भारत में कभी नहीं हुआ, वैसा करते हुए, इन सैनिकों की शहादतों को लोकसभा चुनाव में भुनाने के लिए स्वयं प्रधानमंत्री ही निकल पड़े थे। उन्होंने अपने भाषणों में खुलेआम देशवासियों से पुलवामा शहीदों के नाम पर भाजपा को वोट करने की अपील की थी। उस लोकसभा के चुनाव में दिए अपने भाषणों में उन्होंने खुल्लमखुल्ला सेना का चुनावी राजनीतिक इस्तेमाल करते हुए कहा था कि जो नौजवान, पहली बार वोट करने वाले हैं, उन्हें पुलवामा शहीदों के लिए भाजपा को अपना वोट देना चाहिए। उनके इस आचरण पर खुद शहीदों के परिवार स्तब्ध और आहत थे। उनके अपने लोकसभा क्षेत्र वाराणसी के एक पुलवामा शहीद रमेश यादव की 26 वर्ष की युवा पत्नी ने गुस्से से कहा था कि "मोदी कौन होते हैं सेना के नाम पर वोट मांगने वाले ? मेरे पति तो अब इस दुनिया में नहीं हैं, वो तो चले गए और आज मोदी उनके नाम पर वोट मांग रहे हैं। अगर मोदी हवाई जहाज का इंतजाम कर देते, तो आज मेरे पति ज़िंदा होते। इस दुनिया में होते, हमारे साथ होते।" ज्यादातर सैनिकों के परिवारों की ऐसी ही प्रतिक्रिया थी, मगर इन सबसे बेपरवाह मोदी हर चुनावी सभा में पुलवामा के शहीदों के नाम पर भाजपा के लिए वोट मांगते रहे और सैनिकों के प्रति सहानुभूति और सम्मान को भुनाते हुए अपने वोटों की नफरी बढ़ाते रहे। ठीक उसी तरह की आजमाईश अब 22 अप्रैल को पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले को लेकर शुरू हो गयी है। पहलगाम में आतंकियों द्वारा किये गए हत्याकांड से खिन्न, क्षुब्ध, आतंकियों के कायराना वहशीपन से तिलमिलाए और आक्रोश से भरे देश में वापस लौटते ही उन्होंने घटनास्थल पर जाने, मारे गए पर्यटकों को श्रद्धांजलि देने, उनके शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करने, वे सामान्य सुरक्षा से भी वंचित क्यों थे, इसकी जांच पड़ताल करने की बजाय बिहार की चुनावी आम सभा में जाने को प्राथमिकता देकर साफ़ कर दिया कि वे पुलवामा की तरह पहलगाम का भी इसी तरह का चुनावी इस्तेमाल करना चाहते हैं। लहू में गर्म सिन्दूर के बहने का दावा इसी तरह का जुमला है। उनका इरादा इसे बिहार और बंगाल के विधानसभा चुनावों का पासवर्ड बनाने का है। सिन्दूर का बिम्ब पहलगाम में मारे गए पर्यटकों की जिन जीवन संगिनियों के सुहाग उजड़ने से लिया गया है, उनके प्रति इनके कुनबे की भावनाएं कैसी हैं, यह अब दुनिया जान चुकी है। वे जीवन साथी के बिछड़ जाने के प्रतीक के रूप में सिन्दूर का उपयोग कर रहे हैं, उनमें वे भारतीय कश्मीरी विधवाएं भी शामिल हैं, जिनके पति पर्यटकों को बचाते या भारत-पाकिस्तान झड़प में मारे गए, जिनके सुहाग के प्रतीक अलग हैं। आज तक इनके प्रति संवेदना में एक शब्द तक नहीं बोला गया। बहरहाल इस प्रतीक के पीछे निहित सेलेक्टिव भाव को यदि फिलहाल अनदेखा भी कर दें, तो मोदी जिस सिन्दूर का हवाला दे रहे हैं और जिसकी गर्माहट में वे बिहार में वोटों की लिट्टी चोखा और बंगाल में माछेर झोल पकाना चाहते हैं, उसमें हिमांशी का सिन्दूर भी शामिल है। इस हमले में शहीद हुए लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की युवा पत्नी हिमांशी ने जब पहलगाम के बहाने हिंदू-मुस्लिम, कश्मीरी-गैर कश्मीरी के नाम पर उन्माद न फैलाने और देश की एकता बनाए रखने की अपील की, तो उन्हें जिस तरह की जुगुप्सा जगाने वाली वीभत्स ट्रोल का निशाना बनाया गया, जितनी गन्दी और बेहूदा बातें उनके बारे में की गयी, उन्हें परिभाषित करने के लिए शर्मनाक या निंदनीय शब्द नाकाफी महसूस होते हैं। किसी कश्मीरी लड़के के साथ उनकी फर्जी तस्वीरें तक वायरल की गयीं। यह ट्रोल इतनी भयानक थीं कि राष्ट्रीय महिला आयोग को भी उसका संज्ञान लेना पड़ा और इस पर आपत्ति जतानी पड़ी। बचपन से ही इस कुनबे के सगे रहे पत्रकार प्रभु चावला तक को यह नागवार गुजरी। उन्होंने इसे 'डिजिटल लिंचिंग' बताया और आश्चर्य व्यक्त किया कि इन पर रोक क्यों नहीं लगाई जाती। मगर जो मोदी सरकार थोक के भाव न्यूज़ पोर्टल्स, वेब मैगजीन्स और सोशल मीडिया साइट्स को ब्लाक करवाने में जुटी थी, फैज़ की नज़्म गाने वालों से लेकर कार्टून बनाने वालों तक को पकड़कर जेल में डाल रही थी, उसने इनमें से किसी एक के खिलाफ भी, कहीं कोई एफआईआर दर्ज नहीं कराई। किसी का भी अकाउंट बंद कराने के निर्देश नहीं दिए गए। वजह साफ़ थी : पहलगाम में उजड़े सिन्दूर पर लपकते ये ट्रोल भेड़िये किसी गली या नुक्कड़ पर बैठे लम्पट शोहदे नहीं थे, इनमें से अनेक के एकाउंट्स को खुद मोदी फॉलो करते है। ये कोई छुटभैय्ये फ्रिंज एलेमेंट्स नहीं है, ये कुनबे के नामी-गिरामी और बड़े वाले स्वयंसेवक है। इनमें मप्र में मोदी की भाजपा सरकार के 'यशस्वी' उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा और 'तेजस्वी' कैबिनेट मंत्री विजय शाह भी हैं, जिन्होंने सारी सीमायें लांघ दी, मगर कमाल है जो उनकी निंदा में किसी भाजपाई ने उफ़ तक की हो। इधर मोदी पहलगाम में उजड़े सिन्दूर को ध्वजा बनाए घूम रहे हैं, उधर उन्हीं की पार्टी के राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगडा उन्ही स्त्रियों को कोस रहे हैं, जिनके पति आतंकी हमले में मारे गए। उन्हें धिक्कारते हुए कह रहे हैं कि "जिनका सिन्दूर छीना गया, उनमे वीरांगना भाव नहीं था, जोश नहीं था, जज्बा नहीं था, दिल नहीं था झ इसलिए हाथ जोड़कर गोली का शिकार बन गए।" शोकाकुल स्त्रियों, मोदी के बिम्ब में ही कहे, तो एक ही सांस में सिन्दूर का इतना निर्लज्ज अपमान करने की धृष्टता और उन्हीं के सिन्दूर से राजतिलक की कामना करने का इतना निराट पाखण्ड भाजपा ही कर सकती है। ऑपरेशन सिन्दूर के नाम पर देश भर में भाजपा और संघियों द्वारा निकाली जा रही कथित तिरंगा यात्रायें उन चूकों, गलतियों और विफलताओं से ध्यान बंटाने की कोशिशें हैं, जिनके चलते पहलगाम जैसा काण्ड हुआ। इस आतंकी हमले के बावजूद दुनिया भर में अपेक्षित समर्थन न जुटा पाने की जिम्मेदार असफल और दिशाहीन विदेश नीति पर पर्दा डालने की कोशिश है।

(लेखक 'लोकजतन' के सम्पादक)

संपादकीय

'ऑपरेशन सिंदूर'

पाकपरस्त आतंकवाद और 'ऑपरेशन सिंदूर' पर खूब सियासत हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी शहर-शहर जनसभाओं को संबोधित कर रहे हैं। खूब तालियां और नारेबाजी बटोर रहे हैं। विपक्ष और खासकर कांग्रेस सारस्प में 'ऑपरेशन सिंदूर' और मोदी सरकार की विदेश नीति को नाकाम करार दे रही है। विपक्ष की व्याख्या है कि मोदी सरकार के नेतृत्व में भारत अकेला रहा, जबकि पाकिस्तान के साथ चीन, तुर्किये, अजरबैजान आदि देश सक्रिय रूप से जुड़े रहे। विपक्ष सेना के शौर्य, पराक्रम और प्रहारों की प्रशंसा कर रहा है, लेकिन सरकार को हर स्तर पर नाकाम आंक रहा है। सवाल है कि एक सशस्त्र ऑपरेशन चलाने, आतंकियों के 9 प्रमुख अड्डे मिट्टी-मलबा कर देने और 172 आतंकियों को ढेर कर देने के निष्कर्ष के तौर पर चंद सवाल ही पूछे जा रहे हैं कि देश को क्या मिला? क्या आतंकवाद खत्म हो गया? क्या हाफिज सईद, मसूद अजहर सरीखे खूंखार आतंकी सरगनाओं को भारत को सौंपने की शर्त तय हुई है? यह सब कुछ अनर्गल है। बहरहाल सियासत के प्रतीक के तौर पर अब 'सिंदूर' मिल गया है। भाजपा भी घर-घर जाकर महिलाओं को उपहार के तौर पर 'सिंदूर' बांटेगी। क्या सिंदूर कोई भी, किसी भी समय, बांट सकता है अथवा यह वैवाहिक रस्मों की एक पवित्र प्रक्रिया है? भाजपा ने 9 जून से एक माह का राष्ट्रीय अभियान शुरूकरना तय किया है। इस तारीख पर, बीते वर्ष 2024 को, प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी। उसी की सालगिरह मनाई जा रही है। मोदी पहली बार 26 मई, 2014 को देश के प्रधानमंत्री बने थे। उन्होंने यह तारीख गुजरात की जनता के साथ साझा की है। अब 'सिंदूर' ऐसा प्रतीक भाजपा के हाथ लगा है कि वह देश की जनता को सेना, युद्ध और आतंकवाद के आधार पर भावुक बना सकती है, लिहाजा पार्टी के पक्ष में एक राजनीतिक ध्रुवीकरण भी हो सकता है। भाजपा का नया जनाधार भी तैयार हो सकता है। इस अभियान के दौरान केंद्रीय मंत्री और सांसदों समेत पार्टी पदाधिकारी और काडर पदयात्रा भी करेंगे। बूथ स्तर की सियासत सक्रिय की जाएगी। आम आदमी तक 'ऑपरेशन सिंदूर' के सच भी भेजे जाएंगे और मोदी सरकार की प्रमुख योजनाओं के प्रचार भी किए जाएंगे। राजनीति की पराकाष्ठा यह है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान जिन विभागों ने, किसी भी तरह का, योगदान दिया था, उस पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म भी बनाई जाएगी। विभागों के कर्मचारियों के परिजनों को वह शॉर्ट फिल्म दिखाई जाएगी। वीर रस और गौरव से भरी ऐसी सियासत नहीं देखी। पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित कराने के लिए दबाव डालना होगा।

बदलते मौसम की मारः क्या हम तैयार हैं?

प्रो. आरके जैन

बदलते मौसम की दस्तक हमारे जीवन में केवल हवा, तापमान, या बारिश के रूप में नहीं आती, बल्कि यह अपने साथ ऐसी चुनौतियाँ भी लाती है, जो हमारी सेहत को चुपके से प्रभावित कर सकती हैं। गर्मी की तपिश, बरसात की उमस, या सर्दी की ठिठुरन-हर मौसम अपने साथ बीमारियों का एक नया काफिला लाता है। डेंगू, मलेरिया, फ्लू, निमोनिया, और त्वचा संबंधी रोग मौसम के बदलते मिजाज के साथ हमारे जीवन में दबे पांव प्रवेश करते हैं। ये बीमारियाँ न उम्र देखती हैं, न अमीर-गरीब का भेद। सवाल यह नहीं कि मौसम बदल रहे हैं; सवाल यह है कि क्या हम इनके साथ आने वाली स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार हैं? या फिर हम बीमारी के दरवाजा खटखटाने का इंतजार करते हैं, ताकि बाद में इलाज के लिए भागदौड़ करें? गर्मी का मौसम आते ही लू, डिहाइड्रेशन, फूड पॉइजनिंग, और त्वचा के संक्रमण आम हो जाते हैं। तेज धूप और पसीने के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है, जिससे थकान, चक्कर, और गंभीर मामलों में किडनी संबंधी समस्याएँ तक हो सकती हैं। गर्मियों में खाने-पीने की चीजें जल्दी खराब हो जाती हैं, जिससे पेट की बीमारियाँ बढ़ती हैं। बरसात का मौसम मच्छरों के लिए स्वर्ग बन जाता है, जिससे डेंगू, मलेरिया, और चिकनगुनिया जैसी बीमारियाँ चरम पर होती हैं। उमस भरे माहौल और गीले कपड़ों के कारण फंगल इन्फेक्शन और त्वचा की एलर्जी तेजी से फैलती हैं। सर्दियों में ठंडी हवाएँ जुकाम, खांसी, वायरल बुखार, और निमोनिया को न्योता देती हैं। अस्थमा और हृदय रोगों से पीड़ित लोगों के लिए यह मौसम खासा जोखिम भरा होता है। बदलता तापमान और हवा में नमी का स्तर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करता है, जिससे हम वायरस और बैक्टीरिया के प्रति ज्यादा संवेदनशील हो जाते हैं। दुखद है कि हम में से अधिकांश लोग इन मौसमी बीमारियों को गंभीरता से नहीं लेते। मौसम बदलते ही हम कपड़ों में हल्का बदलाव या खानपान में थोड़ा परहेज कर लेते हैं, लेकिन स्वास्थ्य के प्रति दीर्घकालिक सजगता की कमी साफ दिखती है। एक साधारण जुकाम को हम "मौसम का असर" कहकर टाल देते हैं, लेकिन यही लापरवाही कई बार गंभीर बीमारियों का रूप ले लेती है। कोविड-19 महामारी ने हमें सिखाया कि छोटी सी लापरवाही भी बड़े स्वास्थ्य संकट का कारण बन सकती है। फिर भी, हमारी आदतें नहीं बदलतीं। कितने लोग मौसम बदलने से पहले मच्छरों से बचाव की व्यवस्था करते हैं? कितने लोग गर्मी में पर्याप्त पानी या सर्दी में गर्म कपड़ों जैसे बुनियादी कदम उठाते हैं? यह लापरवाही न केवल हमें, बल्कि हमारे परिवार और समुदाय को भी खतरे में डालती है। अब समय है कि हम मौसमी बीमारियों के प्रति अपनी सोच बदलें। यह प्रतिक्रियात्मक रवैये का नहीं, बल्कि पूर्व-तैयारी का समय है। हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने होंगे जो हमें हर मौसम के लिए तैयार रखें। संतुलित आहार, जिसमें मौसमी फल, सब्जियाँ, और प्रोटीन शामिल हों, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, और तनाव से दूरी-ये हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता के आधारस्तंभ हैं। गर्मियों में नारियल पानी, नींबू पानी, और मौसमी फल शरीर को हाइड्रेट रखते हैं। सर्दियों में गर्म सूप, अदरक, और तुलसी शरीर को गर्मी और ताकत देते हैं। बरसात में साफ-सफाई, उबला पानी, और मच्छरों से बचाव के उपाय जरूरी हैं। ये छोटे कदम हमें बीमारियों से बचाने में बड़ा काम करते हैं। जागरूकता इस दिशा में महत्वपूर्ण है। लोगों को यह जानना जरूरी है कि किस मौसम में कौन सी बीमारियाँ फैलती हैं और उनसे बचने के उपाय क्या हैं। बरसात में पानी जमा न होने देना, मच्छरदानी का उपयोग, और कीटनाशकों का छिड़काव डेंगू और मलेरिया से बचाव में कारगर है। गर्मियों में धूप से बचने के लिए छाता, टोपी, और हल्के रंग के कपड़े पहनने चाहिए। सर्दियों में बच्चों और बुजुर्गों को फ्लू वैक्सीन देना जरूरी है। स्कूलों, कॉलेजों, और कार्यस्थलों पर जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित हैं, ऐसी जानकारी जीवन रक्षक हो सकती है। सरकार और स्वास्थ्य संस्थानों की जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मौसमी बीमारियों से निपटने के लिए सुसज्जित करना होगा। आवश्यक दवाइयाँ, जांच सुविधाएँ, और प्रशिक्षित डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए। जागरूकता अभियान गाँव-गाँव और शहर-शहर तक पहुँचने चाहिए। रेडियो, टीवी, सोशल मीडिया, और पोस्टरों के जरिए सही जानकारी दी जा सकती है। कोविड-19 के दौरान दिखाई गई तत्परता मौसमी बीमारियों के लिए भी दिखानी होगी। शुरुआती पहचान और इलाज से न केवल मरीज की जान बच सकती है, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं पर आर्थिक बोझ भी कम होगा। मौसम का बदलना प्राकृतिक है, लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम के पैटर्न अनिश्चित हो गए हैं। बेमौसम बारिश और असामान्य गर्मी नई बीमारियों को जन्म दे रही हैं। ऐसे में हमारी तैयारी दीर्घकालिक होनी चाहिए। स्वच्छ पानी, साफ-सफाई, और नियमित स्वास्थ्य जांच जैसी आदतें हमें हर मौसम में सुरक्षित रखेंगी। यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम खुद को, अपने परिवार, और समुदाय को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करें। मौसम का बदलना उसका स्वभाव है, लेकिन बीमारियों से जूझना हमारा स्वभाव नहीं होना चाहिए। सही समय पर सही कदम और मौसम के अनुकूल जीवनशैली हमें इन चुनौतियों से बचा सकती है। मौसम को रोकना हमारे बस में नहीं, लेकिन उसकी मार से बचना हमारे हाथ में है। लापरवाही को अलविदा कहकर सजगता अपनाएँ। अगर हम तैयार हैं, तो कोई मौसम हमें हरा नहीं सकता। यह तैयारी हमारी सबसे बड़ी ताकत है, और यही आज की सबसे बड़ी जरूरत।

श्रीनिवास रामानुजनः एक स्लेट ओर चाक से कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय तक

विजय गर्ग

श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 1887 में दक्षिणी भारत के इरोड नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका परिवार गरीब था, और एक बच्चे के रूप में, उनके पास उन्नत गणित में उचित पुस्तकों या औपचारिक शिक्षा तक बहुत कम पहुंच थी। लेकिन कम उम्र से उन्होंने संख्याओं के बारे में एक असाधारण जिज्ञासा दिखाई। 15 साल की उम्र में, उन्होंने गणित की एक पुरानी किताब की एक प्रति पर ठोकर खाई - ॅ.र. द्वारा शुद्ध और अनुप्रयुक्त गणित में प्राथमिक परिणामों की एक सारांश। उं११। पुस्तक केवल हजारों प्रमेयों और सूत्रों की एक सूची थी, जिसमें कोई स्पष्टीकरण नहीं था। लेकिन रामानुजन के लिए, यह एक सोने की खान थी। उन्होंने अपने दम पर इन सूत्रों के माध्यम से काम करके खुद को उन्नत गणित सिखाना शुरू किया - अक्सर चाक और एक छोटे स्लेट का उपयोग करना, क्योंकि कागज बहुत महंगा था। कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं होने के बावजूद, उन्होंने कई मूल प्रमेय विकसित किए, अक्सर दुनिया के शीर्ष गणितज्ञों द्वारा की गई खोजों को फिर से विकसित किया - और यहां तक कि उनसे बहुत आगे निकल गया। लेकिन उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। गणित के साथ उनके जुनून ने उन्हें अन्य विषयों में विफल कर दिया, और उन्हें कॉलेज से बाहर निकलना पड़ा। वह बेरोजगार और संघर्ष कर रहा था, लेकिन उसने लगातार गणित पर काम करना जारी रखा। निर्णायक 1913 में, रामानुजन ने विश्वास की छलांग लगाई। उन्होंने अपने गणितीय निष्कर्षों से भरा एक पत्र जी.एच. हार्डी, इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में एक प्रमुख गणितज्ञ। हार्डी ने पहले सोचा था कि पत्र एक शरारत हो सकती है - सूत्र अजीब, मूल और कभी-कभी शब्दों में गलत थे - लेकिन कई आश्चर्यजनक रूप से सटीक और गहराई से व्यावहारिक थे। हार्डी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने रामानुजन को कैम्ब्रिज में आमंत्रित किया। बहुत अनुनय (और धार्मिक और सांस्कृतिक चुनौतियों पर काबू पाने) के बाद, रामानुजन ने 1914 में इंग्लैंड की यात्रा की। एक नई दुनिया कैम्ब्रिज में, रामानुजन के पास अंततः एक विश्व स्तरीय गणितीय वातावरण तक पहुंच थी। उन्होंने और हार्डी ने संख्या सिद्धांत, अनंत श्रृंखला और विभाजन - क्षेत्रों में ग्राउंडब्रेकिंग कार्य पर सहयोग किया जो अभी भी रामानुजन के योगदान से गहराई से प्रभावित हैं। लेकिन ठंडी अंग्रेजी जलवायु, युद्धकालीन भोजन की कमी और उनके शाकाहारी आहार ने उनके स्वास्थ्य को कमजोर कर दिया। रामानुजन ने तपेदिक विकसित किया और अंततः भारत लौट आए, जहां 1920 में 32 साल की छोटी उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। परंपरा अपने छोटे जीवन के बावजूद, रामानुजन ने लगभग 4,000 मूल प्रमेयों को पीछे छोड़ दिया, जिनमें से कई उनके समय से आगे थे। उनका काम अभी भी आधुनिक गणित को प्रभावित करता है, जिसमें स्ट्रिंग सिद्धांत और ब्लैक होल भौतिकी जैसे क्षेत्र शामिल हैं। उनकी जीवन कहानी एक शक्तिशाली अनुस्मारक है कि कच्ची प्रतिभा, जुनून और दृढ़ता किसी भी कठिनाई के माध्यम से चमक सकती है। संसाधनों, मेंटरशिप या औपचारिक शिक्षा के बिना भी, रामानुजन दुनिया के अब तक के सबसे महान गणितज्ञों में से एक बन गए हैं।

(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब)

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

कोठियार जंगल में 10 क्विंटल अवैध महुआ व 15 भट्ठियां नष्ट, पुलिस की बड़ी कार्रवाई

सतगावां विजय यादव

कोडरमा पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अवैध शराब के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत सतगावां थाना प्रभारी पु.अ.नि. सौरभ कुमार के नेतृत्व में कोठियार जंगल में छापेमारी की गई। कार्रवाई के दौरान 10 क्विंटल अवैध महुआ, शराब बनाने के उपकरण, और करीब 15 अवैध भट्ठियों को मौके पर नष्ट किया गया। छापेमारी टीम में पु.अ.नि. ब्रिजनन्द सिंह, स.अ.नि. रंजीत, स.अ.नि. दाऊद पावरिया और सशस्त्र बल के जवान शामिल थे। इस मामले में सतगावां थाना में आगे की कार्रवाई जारी है।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध हमारी लड़ाई थमेगी नहीं - पप्पू

किसान नेता चौधरी चरण सिंह एवं माता प्रमिला की पुण्यतिथि पर सपाईयों ने लिया संकल्प

जमालपुर।

समाजवादी पार्टी नगर इकाई जमालपुर के तत्वाधान में गुरुवार को नयागांव में किसानों के मसीहा पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 38 वी एवं सपाध्यक्ष की माताजी प्रमिला देवी यादव की 9 वीं पुण्यतिथि कार्यक्रम संयुक्त रूप से आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी पार्टी जमालपुर नगर अध्यक्ष अमर शक्ति ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित सपाईयों ने जिले में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद समाजवादी लोहिया वाहिनी के प्रदेश महासचिव रविकांत झा ने कहा कि आज हम दो महान विभूति की पुण्यतिथि मना रहे हैं। एक जिसने हमें समाज के कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया और एक ने सपा अध्यक्ष भाई पप्पू यादव जैसे सतही संग्रामी नेतृत्वकर्ता को जन्म देकर भ्रष्टाचार के विरुद्ध सड़कों पर आम आदमी के हक और हुकुम के लिए संघर्ष करने के लिए छोड़ दिया। ऐसे दोनों ही महान विभूतियों को हम नमन करते हैं। कार्यक्रम में मौजूद सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव ने कहा कि डॉ लोहिया एवं चरण सिंह के प्रेरणा और अपनी जननी के दिए अद्भुत आत्म बल के कारण आज निरंतर संघर्ष पथ पर हूं। उन्होंने आगे कहा कि जिस तरह से नीतीश कुमार के वर्तमान शासन काल में भ्रष्टाचार चरम पर है। संकल्प लेता हूं कि चाहे परिस्थिति जितने भी जटिल हो भ्रष्टाचार के विरुद्ध हमारी लड़ाई थमेगी नहीं। नगर अध्यक्ष अमर शक्ति ने कहा कि आज हम लोग उस मां, उस जननी को शहर की तरफ से तथा पार्टी की तरफ से श्रद्धांजलि निवेदित करता हूं, जिसने भाई पप्पू जैसा आंदोलनकारी नेतृत्वकर्ता को जन्म दे, आम लोगों के लिए संघर्ष के लिए छोड़ असमय ही चली गई। उन्होंने कहा कि परिस्थिति चाहे जो भी हो, हम सपाई अंचल व प्रखंड कार्यालय सहित अन्य विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखेंगे। मौके पर उपाध्यक्ष रामनाथ राय, महासचिव मिथिलेश यादव, मीडिया प्रभारी मनोज क्रांति, जिला सचिव नकुल यादव, नगर उपाध्यक्ष डॉ सुधीर गुप्ता, सचिव आशीष कुमार, राज कुमार, चंदन साहू सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

बेगूसराय के हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष की हत्या, मुंगेर में मिला शव

सरपंच पति डब्लू यादव ने 24 मई को बेगूसराय से किया था अपहरण

मुंगेर के सीता चरण दियारा से बालू खोदकर निकाला गया शव

रंजीत विद्यार्थी

मुंगेरः बिहार मेंअगवा 'हम' पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष राकेश कुमार का शव मिला है। मुंगेर जिले के सीता चरण दियारा में उन्हें दफनाया गया था। 24 मई की रात सरपंच पति डब्ल्यू यादव ने साथियों के साथ फायरिंग करते हुए राकेश को उनके घर से अपहरण किया था। राकेश कुमार को साहेबपुर कमाल थाना क्षेत्र के संदलपुर गांव से अगवा किया गया था। पुलिस के अनुसार, डब्ल्यू यादव और उसके साथी फायरिंग करते हुए आए और राकेश को उठा ले गए। बताया जाता है कि गंगा किनारे मिला शव बुरी तरह से सड़ गया था। लेकिन, परिजनों ने उसकी पहचान कर ली है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। उन्होंने बताया कि 24 मई की रात सरपंच पति कुख्यात बदमाश डब्ल्यू यादव अपने साथियों के साथ फायरिंग करते हुए अगवा किया था। डब्ल्यू यादव और उसके साथियों ने ही राकेश का अपहरण किया था। इस घटना से इलाके में दहशत का माहौल है।

सरपंच पति डब्ल्यू यादव पर आरोप

बेगूसराय से हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा 'हम' के नेता राकेश कुमार, जिनका 24 मई को अपहरण हुआ था, उनकी हत्या कर दी गई। उनका शव मुंगेर में बालू खोदकर निकाला गया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। दोनों जिलों की पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। राकेश कुमार साहेबपुर कमाल के रहने वाले थे और उनके पिता ने गांव के ही दबंग सरपंच पति डब्ल्यू यादव के विरुद्ध अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराई थी। मुंगेर के मुफस्सिल थाना क्षेत्र में गंगा किनारे बालू के नीचे दबा हुआ शव बरामद हुआ।

सबसे पहले जानवर चराने वालों ने दी जानकारी

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार गुरुवार को मुंगेर मुफस्सिल थाना पुलिस को सीताचरण मंदिर के आसपास के पशुपालकों ने गंगा नदी के किनारे एक लाश होने की जानकारी दी। मुफस्सिल थाना पुलिस ने साहेबपुरकमाल थाना पुलिस को इसकी जानकारी दी। इसके बाद दोनों थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकाला। शव की तस्वीर परिजनों को देते हुए उन्हें मुंगेर सदर अस्पताल आने की सूचना दी। पुलिस से मिली सूचना पर परिजन मुंगेर सदर अस्पताल पहुंचे। शव इतनी क्षत-विक्षत थी कि परिजनों को पहचान में नहीं आ रही थी। शुरूआती दौर में परिजनों का कहना था कि राकेश का शव नहीं है। लेकिन जब पुलिस ने गड्ढे से निकालने के तुरंत बाद की तस्वीर दिखाई। तस्वीर देख परिजनों ने शव की पहचान और पुष्टि की। शव की पहचान होते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

भारत आतंक का शिकार है, आक्रांता नहीं : राजीव प्रताप रुडी रुडी

भारत किसी भी आतंकी कार्रवाई का प्रभावी उत्तर देगा

नो फर्स्ट यूज परमाणु नीति पर भारत आज भी प्रतिबद्ध है।,आतंकवादी और आतंकवाद समर्थक राष्ट्रों में कोई भेद नहीं किया जाएगा।, यह दौरा किसी मांग के लिए नहीं, बल्कि आतंक के विरुद्ध वैश्विक चेतना जगाने के लिए है।

भारत की विविधता उसकी ताकत है, हम एक हैं और साझा मूल्य रखते हैं।, विश्व को आतंक के विरुद्ध स्पष्ट पक्ष लेना होगा।, साउथ अफ्रीका के केपटाउन पहुंचा सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल।, केपटाउन की गांधीभूमि से आतंक के विरुद्ध भारत की वैश्विक चेतना का संकल्प।

नई दिल्ली , ।

साउथ अफ्रीका पहुंचने से पहले कतर यात्रा पर भारतीय सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने दोहा में मीडिया से बातचीत करते हुए स्पष्ट किया कि भारत आतंक का शिकार है, आक्रांता नहीं। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य और भाजपा सांसद राजीव प्रताप रूडी ने कहा कि यह यात्रा किसी मांग या शिकायत के लिए नहीं है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह बताने के लिए है कि आतंकवाद अब केवल क्षेत्रीय चुनौती नहीं, बल्कि वैश्विक संकट बन चुका है। उन्होंने कहा कि भारत विश्व के उन राष्ट्रों के साथ खड़ा है जो आतंक के विरुद्ध एकजुट और रणनीतिक रूप से सक्रिय हैं। रूडी ने कहा कि यह प्रतिनिधिमंडल भारत के 150 करोड़ नागरिकों की विविध लेकिन एकजुट आवाज को लेकर आया है। इस प्रतिनिधिमंडल में सभी प्रमुख दलों के वरिष्ठ सांसद शामिल हैं जिसमें अनुराग सिंह ठाकुर (भाजपा, हिमाचल प्रदेश), आनंद शर्मा (कांग्रेस, हिमाचल प्रदेश), मनीष तिवारी (कांग्रेस, पंजाब), सुप्रिया सुले (एनसीपी, महाराष्ट्र), इंदरबीर सिंह सैनी (आप, पंजाब), लवू श्रीकृष्ण देवरे (टीडीपी, आंध्र प्रदेश), और पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरलीधर राव (भाजपा)। उन्होंने कहा कि भारत के पड़ोस में नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार और चीन जैसे देशों से शांतिपूर्ण संबंध हैं, किंतु कुछ पड़ोसी राष्ट्र ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आतंकवाद को प्रश्रय देते हैं। भारत दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश है, जहाँ विभिन्न धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ सौहार्द के साथ एकसाथ जीते हैं। यह हमारी विविधता ही हमारी एकता की सबसे बड़ी ताकत है।

श्री रूडी ने स्पष्ट किया कि भारत अब किसी भी आतंकी हमले को मूक होकर नहीं सहेगा, उसका प्रतिउत्तर दिया जाएगा। भारत की ह्यनो फर्स्ट यूजह्व परमाणु नीति उसकी जिम्मेदारी का प्रतीक है, लेकिन भारत आतंकवादी और आतंक को

संरक्षण देने वाले राष्ट्रों के बीच अब कोई अंतर नहीं करेगाकृदोनों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्व को अब आतंक के विरुद्ध केवल बयानबाजी से आगे बढ़कर ठोस कदम उठाने होंगे। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि 2001 में विश्व व्यापार केंद्र (डब्लू टी ओ) पर हुआ आतंकी हमला मानवता के खिलाफ सबसे बड़ा अपराध था, और उसका सूत्रधार पाकिस्तान की सरजमीं में छिपा मिला। क्या आज भी दुनिया को इस बात का प्रमाण चाहिए कि आतंक कहां से जन्म लेता है? अंत में उन्होंने कहा कि यह प्रतिनिधिमंडल कतर या किसी अन्य राष्ट्र से कुछ माँगने नहीं आया है, बल्कि यह बताने आया है कि भारत आतंकवाद से पीड़ित है और अब वह इसके विरुद्ध वैश्विक सझेदारी, संवाद और रणनीतिक एकजुटता की वकालत करता है। यही इस यात्रा का उद्देश्य है।

सर्वदलीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन पहुंचा। केपटाउन वही ऐतिहासिक भूमि है, जहाँ महात्मा गांधी ने पहली बार सत्याग्रह का प्रयोग किया और दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष की शुरूआत की थी। यहीं से गांधी जी के विचारों ने वैश्विक दिशा ली–अहिंसा, सविनय अवज्ञा और मानवाधिकारों के लिए निर्भीक आवाज।

आज उसी धरती पर खड़े होकर, भारत से आया यह प्रतिनिधिमंडल गांधी जी के मूल्यों की भावना के साथ, आतंक के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय चेतना जगाने, पीड़ितों की आवाज को वैश्विक मंच तक पहुँचाने, और दुनिया को यह बताने आया है कि भारत आतंक का शिकार है–और अब वह चुप नहीं रहेगा। यह यात्रा, संवाद और सहयोग के माध्यम से, वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए एक साझा संकल्प का आह्वान है।

ढलाई की सेंटरिंग गिरने से मजदूर की हुई मौत, परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल

मुंगेर।

सदर अस्पताल मुंगेर परिसर में गुरुवार दोपहर एक मजदूर के परिजनों के करुण भरी चीत्कार से इस कदर गूंज उठा, मानों कि एक घर नहीं बल्कि पूरे परिवार और पूरे समाज के घर का चिराग ही बुझ गया हो। मृतक के परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल था। एक मां अपने बेटे के लिए कलेजा फाड़कर रोते हुए ऊपर वाले से ये ही शिकायत कर रही थी कि अब कौन मेरे बुढ़ापे की लाठी बनेगा? कौन मेरे इस ढलती उम्र में अपने कंधे का सहारा देगा? मृतक की पत्नी रोते बिलखते हुए ईश्वर को पुकार रही थी कि अब उनके बच्चों का कौन भविष्य बनाएगा? एक बहन अपने भाई का नाम लेकर यही बार बार सुना रही थी कि अब मैं किसकी

कलाई पर राखी बांधूंगी? मामला मुंगेर-लखीसराय राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित मेदनीचौकी के निकट बिंद टोला की है जहां बेगूसराय जिला के सलहा के निकट स्थित शामो गांव निवासी 30 वर्षीय रामचंद्र बिंद पिछले कुछ समय से मेदनीचौकी के समीप बिंद टोला अपने ससुराल में रहकर मजदूरी कर रहा था। मृतक के पिता रामविलास बिंद एवं बड़ा साला सुरेंद्र बिंद ने बताया कि रामचंद्र बिंद मेदनीचौकी में एक मकान में ढलाई का काम कर रहा था। बुधवार को ढलाई का सेंटरिंग खुलना था। जहां बुधवार शाम करीब 7 बजे की अचानक सेंटरिंग ढह गया। सेंटरिंग अचानक से रामचंद्र बिंद के सिर पर जा गिरा। जिसके बाद किसी तरह से रामचंद्र बिंद को किसी तरह से बाहर निकाला गया और स्थानीय चिकित्सक से ईलाज कराया गया। रात को खाना खाने के बाद रामचंद्र बिंद सो गया। लेकिन शुक्रवार सुबह रामचंद्र बिंद सोया ही रह गया। परिजनों के द्वारा उसे सदर अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक रामचंद्र बिंद अपने पीछे 2 पुत्री और 2 पुत्र को छोड़ गया है। मामले को लेकर कोतवाली थाना पुलिस ने मृतक के परिवार के बयान के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर छानबीन शुरू कर दिया है।

असम के विश्वनाथ जिले में उपस्थित असम लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष देबराज उपाध्याय

उपाध्याय ने जिला प्रशासन के उच्च स्तरीय अधिकारियों के साथ किया समीक्षा बैठक।

पंकज नाथ, आदिवासी एक्सप्रेस , असम :

असम के विश्वनाथ जिले में असम लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष देवराज उपाध्याय उपस्थित होकर जिला प्रशासन के उच्च अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक में भाग लिया । आगामी 8 जून, रविवार को विश्वनाथ जिले के विभिन्न परीक्षा केंद्रों में होने वाली असम लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा 2024 की तैयारियों को लेकर यह बैठक विश्वनाथ के नए आवर्त भवन के सम्मेलन कक्ष में आयोजित हुई। बैठक में भारतीय पुलिस सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी एवं असम लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष देवराज उपाध्याय ने जिले में होने वाली इस परीक्षा की तैयारियों की जानकारी ली और सुरक्षा तथा कानून-व्यवस्था की समीक्षा की। उन्होंने परीक्षा को शांतिपूर्ण और व्यवस्थित तरीके से संपन्न कराने के लिए जिला प्रशासन को सभी आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दिया। विश्वनाथ जिला प्रशासन ने भी परीक्षा को पारदर्शी, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से आयोजित करने के लिए सभी संभव उपाय किए हैं। इस समीक्षा बैठक में जिला आयुक्त मुनिंद्र नाथ नाटे, पुलिस अधीक्षक शुभाशीष बरुआ, अतिरिक्त जिला आयुक्त राकेश डेका और असीम बरगोहाई, विश्वनाथ के सर्कल अधिकारी माधुर्य पराशर, सर्कल अधिकारी (संलग्न) मुनचुन बरकाकती, सहायक आयुक्त पुष्पांकर पाटीर, दीक्षित दास समेत अन्य अधिकारी उपस्थित थे।गौरतलब है कि परीक्षा को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए आज भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), 2023 की धारा 163 के तहत जिला दंडाधिकारी मुनिंद्र नाथ नाटे ने कुछ निषेधाज्ञाएँ लागू की हैं। जारी आदेश के अनुसार परीक्षा केंद्र से 100 मीटर के दायरे में–परीक्षा में शामिल होने वाले प्रमाणपत्रधारी अभ्यर्थी, परीक्षा से जुड़े पर्यवेक्षक, कर्मचारी और परीक्षा दल, कानून-व्यवस्था एवं आवश्यक सेवाओं के रखरखाव से जुड़े सरकारी अधिकारी-कर्मचारी और परीक्षा संचालन में लगे किसी भी सरकारी अधिकारी-कर्मचारी के अलावा अन्य किसी व्यक्ति की उपस्थिति पर रोक लगाई गई है।

जिला जज द्वारा किया गया कारा का निरीक्षण स्वच्छता तथा आहार एवं भोजन की गुणवत्ता पर दिये गये आवश्यक निर्देश

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री राज कुमार द्वारा आज मण्डल कारा, औरंगाबाद का निरीक्षण किया गया। जेल के निरीक्षण में जिला जज द्वारा जेल में मौजूद बुनियादी व्यवस्था को देखा गया। जिला जज द्वारा जेलों की स्थिति के सम्बन्ध में चिंता को समझने के लिए बंदियों के प्रत्येक वार्ड में घूम कर उनसे मुखातिब होकर उनकी समस्याओं को सुना और उनके निदान हेतु कारा प्रशासन को निर्देशित किया तथा कैदियों को विधिक सहायता सेवाओं तक पहुॅच और जेल में स्थापित कानूनी सहायता क्लिनिक के कामकाज को भी देखा गया तथा जिला जज द्वारा कैदियों के कानूनी प्रतिनिधित्व तक पहुॅच सुनिष्चित करने के लिए आवश्यक निर्देश जेल प्रशासन को दिया गया तथा उन्हें प्रदान किये जा रहे आहार भोजन स्वच्छता आदि के सम्बन्ध में विशेष निरीक्षण करते हुए जेल प्रशासन को आवश्यक निर्देश दिया गया। जिला जज द्वारा जेल निरीक्षण के दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव श्रीमती तान्या पटेल मौजूद रहें। सचिव द्वारा सभी कैदियों से उनके विधिक प्रतिनिधित्व के लिए अधिवक्ता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त किया गया।कारा अधीक्षक डॉ दीपक कुमार और जेल सरोज कुमार के साथ साथ जेल निरीक्षण के समय कानूनी सहायता रक्षा प्रणाली के अधिवक्ता जिनमें युगेश किशोर पाण्डेय, मुकेश कुमार, अभिनन्दन कुमार, रंधीर कुमार एवं चन्दन कुमार भी मौजूद रहें।

अवैध शराब तस्करी मामले में भगहर पंचायत के उपमुखिया प्रतिनिधि पर मामला दर्ज

बीते दिन चौपारण पुलिस ने भारी मात्रा में घर से अवैध शराब जब्त किया था, प्रशासनिक सख्ती की शुरूआत

चौपारण राजेश सहाय

जिले के चौपारण प्रखंड अंतर्गत भगहर पंचायत स्थित ग्राम परसातरी में एक बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए पुलिस ने पंचायत के उपमुखिया प्रतिनिधि मुन्नी लाल यादव के घर से भारी मात्रा में अवैध शराब जब्त की है। यह कार्रवाई मंगलवार को की गई, जिसमें चौपारण थाना की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर यह सफलता पाई। इस कार्रवाई से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया है और पंचायत प्रतिनिधियों की भूमिका पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं।

कानूनी शिकंजा कसा , दर्ज हुआ मामला

इस मामले में चौपारण पुलिस ने मुन्नी लाल यादव के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली है। केस संख्या 151/25 के तहत उनके खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धाराएं 272, 274, 275, 292, 317(5), 3(5) तथा उत्पाद अधिनियम की धारा 47(अ) लगाई गई हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि अब प्रशासन अवैध शराब कारोबार के खिलाफ कठोर रुख अपनाने की दिशा में गंभीर है, चाहे आरोपी किसी भी पद या प्रतिष्ठा का व्यक्ति क्यों न हो।

पंचायत प्रतिनिधि की संलिप्तता से उठे गंभीर सवाल

गांव और पंचायत के विकास के लिए नियुक्त प्रतिनिधि अगर स्वयं अवैध कार्यों में संलिप्त पाए जाएं, तो यह लोकतांत्रिक व्यवस्था और जनविश्वास दोनों के लिए गहरा आघात है। मुन्नी लाल यादव जैसे जनप्रतिनिधि का इस तरह के घृणित कार्य में पकड़ा जाना यह दशार्ता है कि कैसे कुछ लोग जनसेवा के नाम पर केवल निजी लाभ और अपराध

की ओर झुक रहे हैं। इस घटना ने ग्रामीणों को भी सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या ऐसे लोगों के हाथों में पंचायत का भविष्य सुरक्षित है?

अवैध शराब कारोबार का गढ़ बनता चौपारण: चुनावी मुद्दे के बावजूद कोई ठोस बदलाव नहीं

यह पहली बार नहीं है जब चौपारण प्रखंड में अवैध शराब तस्करी का मामला सामने आया है। वर्ष 2024 के विधानसभा चुनाव के दौरान यह मुद्दा जोरों से उठा था और नेताओं ने मंच से वादा किया था कि इस कारोबार पर पूरी तरह लगाम लगेगी। लेकिन चुनाव बीतने के बाद भी हालात जस के तस हैं। चौपारण में अब भी अवैध शराब का कारोबार अपने चरम पर है, जिसमें कुछ सफेदपोश और रसूखदार लोग भी संलिप्त बताए जा रहे हैं।

प्रशासनिक सख्ती के संकेत: थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश की चेतावनी

इस बीच चौपारण के युवा और तेज तर्रार थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि अवैध शराब का धंधा करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि चाहे आरोपी कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, कानून अपना काम करेगा और दोषियों को जेल की सलाखों के पीछे डाला जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि क्षेत्र में अन्य संदिग्ध स्थानों की भी निगरानी की जा रही है और जल्दी ही और भी छापेमारियां हो सकती हैं।

जनता में रोष, मांग उठी कड़ी कार्रवाई की

इस घटना से क्षेत्र की जनता में आक्रोश है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि पंचायत प्रतिनिधि ही कानून तोड़ने लगे तो समाज का क्या होगा? लोगों ने जिला प्रशासन से यह मांग की है कि ऐसे जनप्रतिनिधियों को तुरंत उनके पद से हटाया जाए और उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ताकि भविष्य में कोई और इस तरह की हिम्मत न कर सके।चौपारण प्रखंड में पंचायत स्तर पर फैले अवैध कारोबार के खिलाफ यह कार्रवाई प्रशासन की एक निर्णायक शरूआत मानी जा सकती है। यदि ऐसे मामलों में जल्द और कठोर निर्णय लिए जाते हैं, तो यह न केवल पंचायत व्यवस्था की गरिमा को बचाएगा, बल्कि आम जनता के बीच कानून व्यवस्था के प्रति विश्वास भी मजबूत होगा। जनता अब सिर्फ कार्रवाई नहीं, बल्कि न्याय और सुधार की दिशा में ठोस कदम की अपेक्षा कर रही है।

संक्षिप्त समाचार

विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस पर औरंगाबाद जिले में आयोजित हुआ जागरूकता कार्यक्रम

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- महिला एवं बाल विकास निगम बिहार तथा जिला पदाधिकारी के निर्देशानुसार जिले के सभी प्रखंडों में विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस के अवसर पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य किशोरियों एवं महिलाओं को मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन के प्रति जागरूक करना था। इस अवसर पर जिला प्रोग्राम पदाधिकारी श्रीमती विनीता कुमारी ने बताया कि मासिक धर्म से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करना एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाना एक स्वस्थ एवं सुरक्षित समाज के निर्माण की दिशा में अहम कदम है। उन्होंने बालिकाओं से आह्वान किया कि वे इस विषय में न केवल स्वयं जागरूक रहें, बल्कि अपने आसपास की महिलाओं को भी इसकी जानकारी दें। साथ ही, किसी भी प्रकार की समस्या होने पर नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से तुरंत संपर्क करने की सलाह दी गई। इसी क्रम में बाल विकास परियोजना, दाउदनगर के अंतर्गत उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सी.डी.पी.ओ. ने कहा कि माहवारी के दौरान लड़कियों को साफ-सफाई, संतुलित एवं पोषणयुक्त आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि वे स्वस्थ रहें। कार्यक्रम में उपस्थित जिला परियोजना प्रबंधक श्री ब्रजेश सिंह एवं जेंडर स्पेशलिस्ट श्री चंदन कुमार ठाकुर (DHEW) ने जिला हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ वीमेन (DHEW) की गतिविधियों तथा महिलाओं को सशक्त बनाने वाली विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी साझा की। यह आयोजन माहवारी जैसे संवेदनशील विषय पर समाज में संवाद स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा, जिससे किशोरियों एवं महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहेंगी।

जिला स्तरीय नियोजन-सह-व्यवसायिक मार्गदर्शन मेला का आयोजन किया गया

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले में जिला स्तरीय नियोजन-सह-व्यवसायिक मार्गदर्शन मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुल 23 प्रतिष्ठित नियोजकों ने भाग लिया। मेले में फ्ऐळक् ऊ्र्ळ्उ, आई.टी.आई. अप्रेंटिसशिप, श्रम विभाग समेत अन्य संस्थाओं ने अपने-अपने स्टॉल लगाकर लगभग 900 प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। इस मेले में नियोजकों द्वारा कुल 648 बायोडाटा एकत्र किए गए, जिनमें से 316 अभ्यर्थियों को मौके पर ही शॉर्टलिस्ट/चयनित किया गया। आयोजन स्थल पर लगभग 1000 अभ्यर्थियों की उपस्थिति रही, जिससे मेले की सफलता स्पष्ट झलकती है। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय सांसद श्री राजाराम सिंह (काराकाट लोकसभा), श्रीमती अंजली कुमारी (अध्यक्ष, नगर परिषद, दाउदनगर), तथा श्री मो० जफर ईमाम (प्रखंड विकास पदाधिकारी, दाउदनगर) द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर डी.एस.एम. श्री राकेश कुमार, श्री सुधा रंजन तथा सभी प्रमुख ङढ कोऑर्डिनेटर उपस्थित रहे। कुशल युवा कार्यक्रम से जुड़े लाभार्थियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किए गए। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री दिनेश तिवारी, जिला नियोजन पदाधिकारी, औरंगाबाद द्वारा किया गया।

नाबालिग के अपहरण सह रेप के आरोपी दोषी करार दिया गया

रिपोर्ट :- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के व्यवहार न्यायालय में स्पेशल पोक्सो जज लक्ष्मीकांत मिश्रा नवीनगर थाना कांड संख्या -47/24 ,जी. आर -21/24 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एक मात्र काराधिन अभियुक्त को दोषी ठहराया है, स्पेशल पीपी शिवलाल मेहता ने बताया कि अभियुक्त योगेन्द्र पासवान अनुकुपा कुटुंबा को भादंवि धारा -323,342,363,376 और पोक्सो एक्ट में दोषी करार दिया गया है सजा के बिन्दु पर सुनवाई के तिथि 30/05/25 निर्धारित किया गया है, अभियोजन की ओर से 09 गवाही हुई थी इस केस के आई. ओ. पिंकी कुमारी और कामिनी कुमारी थी, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि नाबालिग पीड़िता अपने स्कूल के वार्षिक उत्सव में गई थी,प्राइज के लिए कार्यक्रम बाद तक स्कूल में रूकी हुई थी जब लेट होने लगी तो अकेले घर जाने लगी तब अज्ञात व्यक्ति ने जबरदस्ती बाईक पर बेठा कर टंडवा के रास्ते हरिहरगंज ले जाकर जबरदस्ती किया,जब पीड़िता रोने लगी तो अज्ञात व्यक्ति ने फोन लगाकर उसके मां से बात कराया इस मो. नम्बर को पीड़िता के परिजन ने पुलिस को देकर अज्ञात व्यक्ति पर प्राथमिकी दर्ज कराई थी, पुलिस के तबाड़तोड़ छापेमारी से दहशत में आए अज्ञात अभियुक्त ने शिवपुर मोड़ पर पीड़िता को छोड़ कर भाग गया, पुलिस ने पीड़िता के निशानदेही पर हरिहर गंज के एक ज्वेलरी शॉप के सीसीटीवी फुटेज देखा जिसमें ज्वेलरी शॉप के मालिक ने अभियुक्त के पहचान उजागर किया अभियुक्त इस घटना के बाद एक उत्पाद कोर्ट के केस में जेल चला गया, अभियुक्त की 10/05/24 से इस केस में हिरासत में लिया गया, अभियुक्त का टी आई पी परेड कर पीड़िता द्वारा पहचान कराई गई थी, अभियोजन पक्ष द्वारा इस वाद में मेडिकल, एफ एस एल रिपोर्ट, डीएनए टेस्ट, वैज्ञानिक तरीके से जांच कराई गई थी, अभियोजन में पुलिस प्रशासन का भरपूर सहयोग मिला था, अभियुक्त के नाम से आरोपपत्र 23/07/24 को न्यायालय में आई थी अभियुक्त पर आरोप गठन -13/09/24 को हुई थी आरोप गठन के बाद तेजी से वाद की सुनवाई पूरी किया गया है,कल अभियुक्त को सजा सुनाई जाएगी

धरहरा अस्पताल में 'डॉक्टर' कौन ,बिना ड्रेस कोड के घूमते कर्मी, मरीजों से झगड़े आम बात

हम नहीं सुधरेंगे और ना ही सुधारने देंगें के तर्ज पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धरहरा

आशीष कश्यप

धरहरा (मुंगेर) : सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धरहरा का हाल ऐसा है कि यहां मरीज यह तक नहीं पहचान पाते कि डॉक्टर कौन है और वार्डबॉय कौन। वजह, न कोई ड्रेस कोड, न पहचान पत्र, और न ही रोस्टर का पालन। हालात इतने बदतर हैं कि आए दिन अस्पताल परिसर में बकझक और हाथापाई की नौबत आ जाती है।

गुरुवार को लोगों की शिकायत पर जब अस्पताल पहुंचे तो सुबह 11:30 बजे तक स्थापना कार्यालय पर ताला लटका था। दवा वितरण काउंटर पर कोई फार्मासिस्ट नजर नहीं आया। कई चिकित्सक यूं ही बिना किसी ड्रेस कोड के घूमते नजर आए. जैसे अस्पताल नहीं, कोई चाय की दुकान हो।

सबसे चौंकाने वाली बात ये कि प्रभारी डॉक्टर अविनाश कुमार की ड्यूटी सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक है, लेकिन वे खुद 11:30 बजे के बाद पहुंचे। ना कोई मीटिंग थी, ना ही कोई इमरजेंसी, फिर देर क्यों यह लोगो के लिए प्रश्न चिन्ह है.

डेंटल कक्ष में गुटखा-राज

डाटा ऑपरेटर ओम प्रकाश शर्मा जिले से जो दिव्यांगता संबंधित कार्य दिया जाता है। उनका ही निष्पादन जैसे संवेदनशील काम गुटखा खाकर कर रहे थे। हर कुछ मिनट में बाहर जाकर पान मसाला खरीद लाते और पॉकेट से निकाल कर खाते हुए काम करते। ऐसे में सरकार के ह्यनशा मुक्त भारतह्ण अभियान की धज्जियां तो उड़नी ही थीं। असहज करने वाली बात यह रहीं कि चिकित्सक तक के नहीं रहने पर और ड्रेस कोड का पालन नहीं करने पर गार्ड भी चिकित्सक के कमरे में आराम फरमाते दिखें तो कई मरीज इन गार्ड के पास ही अपना इलाज कराने पहुंच रहे थे।

ड्रेस कोड से असहज लगती हूं

जीएनएम संगीता कुमारी ने खुले तौर पर कहा कि वे ड्रेस कोड में काम नहीं करेंगी। उन्हें असहजता होती है। ये बयान उन्होंने प्रभारी डॉक्टर अविनाश कुमार के 11:30 बजे आने पर सामने दिया – और कोई जवाब नहीं मिला।

स्वास्थ्यकर्मी लंच टाइम में नदारद

स्वास्थ्य कर्मियों की हाजिरी और छुट्टी का रिकॉर्ड रखने वाले मयुख कुमार भी दिन में ह्यलंच ब्रेकह्ण के नाम पर नदारद रहते हैं। कौन कब आता है, कौन कब जाता है – इसका कोई हिसाब-किताब नहीं। कई बार वे लंच टाइम पर अपने बाइक से बाहर घुमते हुए नजर आते है। सबसे महत्वपूर्ण वाली बात यह रहीं कि जब प्रभारी ने सभी को लाइव लोकेशन भेजने का आदेश दिया है तो लेखापाल अनिल कुमार पासवान एवं मैनेजर राजेश कुमार भी गायब दिखें। इसका मतलब यहीं है कि इन कर्मियों पर प्रभारी के आदेश का असर नहीं होता है। या आदेश सिर्फ दिखावा है।

डीएम साहब, क्या कोई जवाबदेही तय होगी

यह बाते रोगी कल्याण समिति के सदस्य दीनबंधु सिंह चौहान ने कही उन्होने कहा कि धरहरा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं की ऐसी हालत गंभीर चिंता का विषय है। क्या जिला प्रशासन इसपर सख्त कदम उठाएगा या यह भी फाइलों में ही दब कर रह जाएगा।

एनटीपीसी नबीनगर एसटीपीपी, स्टेज-2 (3७800 मेगावॉट) का शिलान्यास माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे।

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद (बिहार) नई दिल्ली :- बिहार और पूर्वी भारत में बिजली आपूर्ति को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल के तहत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 30 मई 2025 को बिहार के औरंगाबाद जिले में 29,948 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से बनने वाले एनटीपीसी नबीनगर एसटीपीपी, स्टेज-2 (3७800 मेगावॉट) का शिलान्यास किया जाएगा। यह परियोजना अत्याधुनिक अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल टेक्नोलॉजी पर आधारित है, जो कि विद्युत उत्पादन में सर्वाधिक एफिशिएंसी प्रदान करती है। एनटीपीसी द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में प्रतिबद्धता के तहत नबीनगर स्टेज-2 संयंत्रों में ड्राई बॉटम ऐश हैंडलिंग सिस्टम और एयर कूल्ड कंडेनसर स्थापित किया जाएगा। इससे विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में आने वाले शुद्ध जल की खपत में काफी कमी आएगी। इसके अलावा इस परियोजना द्वारा बिहार के साथ-साथ राजस्थान, उत्तर प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और पंजाब जैसे राज यों को भी किफायती और विश्वसनीय बिजली की आपूर्ति होगी। इस परियोजना के आने से स्थानीय समुदायों, व्यवसायों और उद्योगों में बढ़ती ऊर्जा की जरूरतें पूरी हो सकेंगी, जिससे क्षेत्र के आर्थिक विकास में मदद मिलेगी। साथ ही, इस परियोजना से देश को ऊर्जा सुरक्षा और किफायती ऊर्जा के दोहरे उद्देश्य को पूरा करने में भी मदद मिलेगी। एनटीपीसी लिमिटेड भारत की सबसे बड़ी एकीकृत विद्युत उत पादन कंपनी है। यह भारत में विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति में एक-चौथाई का योगदान देती है। इसकी मौजूदा स्थापित क्षमता 80 GW से अधिक है तथा 32 GW की अतिरिक्त क्षमता निमार्णाधीन है, जिसमें से 13 GW की ऊर्जा क्षमता नवीकरणीय है। कंपनी 2032 तक 60 GW नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध है। एनटीपीसी अपने थर्मल, हाइड्रो, सौर और पवन ऊर्जा संयंत्रों द्वारा राष्ट्र में विश्वसनीय, किफायती और सतत बिजली आपूर्ति हेतु समर्पित है। कंपनी सर्वोत्तम अभ्यासों का पालन करने, हरित भविष्य के लिए अभिनवता का विकास करने और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

साहित्यसेवियों ने आम महोत्सव का किया आयोजन

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय के सत्येंद्र नगर मुहल्ले में अवकाश प्राप्त प्रोफेसर डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह के आवास कला कुंज के प्रांगण में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन,समकालीन जवाबदेही परिवार एवं बतकही परिवार के संयुक्त तत्वावधान में बसंतावसान के पश्चात राष्ट्रीय फल आम का आमजन के पास उपलब्ध होने के उपलक्ष्य में आम महोत्सव का आयोजन किया गया।जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में आम महोत्सव का संचालन संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी द्वारा किया गया।सर्वप्रथम सभी अतिथियों को अध्यक्ष जी के आवास में आम के पेड़ पर पके हुए आम के फलों का सभी लोगों ने रसास्वादन किया।समकालीन जवाबदेही के प्रधान संपादक डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र,बतकही परिवार के संयोजक शिव शिष्य पुरुषोत्तम पाठक के आतिथ्य भाव में संबोधन के क्रम में जिला महामंत्री धनंजय जयपुरी ने आम पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए इसके साहित्यिक पहलुओं के संदर्भ में कहा कि आम के बारे में कोई देखना चाह तो भारत के विभिन्न भाषाएं अर्थात संस्कृत,बंगला,मराठी हिंदी एवं अन्य भाषाओं के साहित्य में जी भरकर आम के बारे में सराहना की गई है। संस्कृत के विश्व विश्रुत कवि कालिदास ने अपने काव्य में यहां तक कह दिया कि यदि आम के वृक्ष पर मंजरिया नहीं आई , टिकोरे नहीं लगे,आम पके नहीं तो बसंत के आने-जाने का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।संस्कृत का शायद ही कोई ऐसा कवि होगा जिनकी लेखनी मे आम की प्रशंसा में नहीं चली होगी।हिंदी की कवियों ने भी आम को कमतर नहीं आंका है। डॉ रामाधार सिंह ने आम को पर्यावरण का प्रतीक बताया तो पुरुषोत्तम पाठक ने आम की आध्यात्मिक व्याख्या की। मौके पर डॉ शिवपूजन सिंह, कवि लवकुश प्रसाद सिंह, अशोक कुमार सिंह,अर्जुन सिंह,सिंहेश सिंह,अलख देव सिंह, पूर्व डीएसपी उदय प्रताप सिंह,कवि चंदन पाठक सहित अन्य उपस्थित थे।

दस हजार जन्म कुंडली के निमार्ता चारों धाम के यायावरी प्रणेता शिवनारायण बाबू हुए सम्मानित

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :-जिला मुख्यालय के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद आईटी 10000 जन्म कुंडली के निमार्ता भारत के सभी धामों की तीर्थ यात्रा को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने वाले शिवनारायण सिंह जी को अष्टभुजी धाम महोत्सव आयोजन समिति द्वारा सम्मानित किया गया। समिति के संयोजक सुरेश विद्यार्थी एवं संरक्षक अजीत मिश्रा,ज्योतिषी दीपक वैद्य, राजीव पाण्डेय द्वारा उनके निवास जाकर उन्हें अंग वस्त्र एवं अष्टभुजी माता का प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।विदित हो कि पिछले 12 मई को बारुण प्रखंड के पिपरा में अष्टभुजी माता का भव्य एवं दिव्य महोत्सव मनाया गया था जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में शिव नारायण सिंह जी भी आमंत्रित थे। लेकिन उस समय वह चार धाम की यात्रा पर गए हुए थे।उनके संबंध में बताया गया कि शिवनारायण सिंह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं।बचपन से ही संघर्षपूर्ण जीवन जीते हुए उच्च विद्यालय के हेडमास्टर से अवकाश ग्रहण के पश्चात लेखन के क्षेत्र में अपनी जबरदस्त उपस्थिति दर्ज कराई और खुश्बू जैसे लोग, व्यावहारिक ज्योतिष रचना लिखकर साहित्य में अप्रतिम सेवा की तो ज्योतिष के क्षेत्र में भी उन्होंने विशिष्ट उपलब्धि हासिल की और पिछले दो माह पहले 10000 जन्म कुंडली का निर्माण कर विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया।उनके नाम को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में शामिल किया जाना चाहिए एवं भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्म पुरस्कार से भी सम्मानित किया जाना चाहिए। शिवनारायण बाबू इस उम्र भी हमेशा सामाजिक कार्यक्रमों उपस्थित रहते हैं। प्रतिदिन संध्या में ज्योतिष का क्लास चलाते हैं। ज्योतिष सीखने वाले पाठक उनके यहां ज्योतिष विद्या सीखते हैं और सीखने के क्रम में उनसे दक्षिणा भी पाते हैं।देव प्रखंड के छोटे से गांव बहुआरा से आकर जिले में उन्होंने जो कालजई कार्य किया है वह भविष्य में युवा पीढ़ी के लिए वर्तमान समय के संघर्षील बुद्धिजीवियों के लिए एक नजीर साबित होगी। वे प्रेरणा स्रोत है। जीवन में अगर कोई संघर्ष करना सीखे तो वे शिवनारायण बाबू जैसे लोग से सीखें जिन्होंने जीवन पर्यंत संघर्षशील रहकर आज बहुमूल्य मुकाम हासिल किया है एक ही साथ ज्योतिष विद्या,साहित्य की सेवा सामाजिक कार्य हर किसी के दुख दर्द में हमेशा उपस्थित रहने वाले व्यक्ति हैं।सोशल मीडिया का उत्कृष्ट प्लेटफार्म फेसबुक में व्यू 8 लाख पार कर चुके हैं।

पश्चिम बंगाल एटीएस की टीम ने मुंगेर के चार मौत के सौदागरों को धनबाद से किया गिरफ्तार, मिनी गन फैक्ट्री का भंडाफोड़

रंजीत विद्यार्थी

मुंगेर : झारखंड के धनबाद के महुदा में पश्चिम बंगाल एटीएस ने एक अवैध मिनी गन फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया, जहाँ से भारी मात्रा में हथियार बरामद हुए। मुर्शिद अंसारी समेत पांच आरोपी गिरफ्तार किए गए हैं, जिनमें बिहार के मुंगेर के चार कारीगर शामिल हैं। झारखंड में धनबाद जिले के महुदा थाना क्षेत्र के सिंगड़ा बस्ती में बुधवार देर रात पश्चिम बंगाल एटीएस की टीम ने एक अवैध मिनी गन फैक्ट्री का पदार्फाश किया है। एटीएस की टीम ने मौके से भारी मात्रा में अवैध निर्मित और अर्धनिर्मित हथियारों का जखीरा बरामद किया है।

मुर्शिद अंसारी समेत 05 आरोपी हिरासत में

इस कार्रवाई ने न सिर्फ एक संगठित आपराधिक नेटवर्क का खुलासा किया है, बल्कि अंतरराज्यीय हथियार तस्करी के गहरे जाल का भी पदार्फाश किया है। एटीएस की यह छापेमारी महुदा के मुर्शिद अंसारी नामक व्यक्ति के घर पर की गयी, जहां से बड़ी संख्या में निर्मित और अर्धनिर्मित हथियार, अवैध हथियार निर्माण में प्रयुक्त औजार और अन्य तकनीकी उपकरण बरामद किये गये है। पुलिस ने मौके से मुर्शिद अंसारी समेत कुल पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें शामिल चार आरोपी बिहार के मुंगेर जिले के निवासी हैं, जो देश के कुख्यात अवैध हथियार निर्माण केंद्र के रूप में बदनाम है।

चारों कारीगर तकनीकी रूप से बेहद दक्ष

सूत्रों के अनुसार, ये चारों कारीगर तकनीकी रूप से बेहद दक्ष और आपराधिक पृष्ठभूमि वाले हैं। ये गिरोह लंबे समय से सुनियोजित तरीके से अवैध हथियारों का निर्माण कर रहे थे। जिस समय एटीएस की टीम यहां छापेमारी की इस दौरान सभी कारीगर हथियार बनाने में मशगूल थे। वह कुछ समझ पाते इससे पहले एटीएस की टीम ने मौके से ही सभी को दबोच लिया। छापेमारी करने गई झारखंड और बंगाल की एटीएस टीम ने यह समझने का प्रयास किया किया लोग हथियार कैसे बनाते हैं उसके बाद मौके पर ही एक डेमो कर बताने को कहा गया। इस दौरान कारीगरों ने कुछ चंद मिनट में चार पिस्तौल बनाकर एटीएस के सामने रख दिए यह देख एटीएस की टीम दंग रह गई

अंतरराज्यीय हथियार तस्करी से जुड़ा मामला

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि यह मामला अंतरराज्यीय हथियार तस्करी से जुड़ा हो सकता है। गिरफ्तार आरोपियों से गहन पूछताछ की जा रही है, ताकि पूरे नेटवर्क की परतें खोली जा सकें। फिलहाल, मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

जमुई में बोले शिवदीप लांडे, हिंद सेना विधानसभा चुनाव में अकेले अपने दम पर मैदान में उतरेगी

जेपी आंदोलन के बाद सिर्फ तीन-चार नेताओं का ही नाम

रंजीत विद्यार्थी

जमुई (मुंगेर) : शिवदीप लांडे ने कहा कि बिहार की धरती ने उन्हें पहचान दी है, अब वह इस कर्ज को चुकाने के लिए राजनीति में आए हैं। उनकी पार्टी हिंद सेना आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में अकेले अपने दम पर मैदान में उतरेगी। पूर्व आईपीएस अधिकारी और बिहार के चर्चित चेहरा शिवदीप लांडे जमुई पहुंचे जहां उन्होंने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि 1974 के जेपी आंदोलन के बाद बिहार में सिर्फ तीन से चार नेताओं का नाम ही सामने आता है। इसके बाद कोई ठोस नेतृत्व विकसित नहीं हो सका। यही कारण है कि उन्होंने आईपीएस सेवा से त्यागपत्र देकर एक नई राजनीतिक सोच और नेतृत्व गढ़ने की दिशा में कदम बढ़ाया है।

एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जमुई पहुंचे शिवदीप लांडे ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि बिहार की धरती ने उन्हें पहचान दी है, अब वह इस कर्ज को चुकाने के लिए राजनीति में आए हैं। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी हिंद सेना आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में अकेले अपने दम पर मैदान में उतरेगी। बेरोजगारी पर जताई चिंता, युवाओं के भविष्य को बताया सबसे बड़ी चुनौती पूर्व आईपीएस ने कहा कि बिहार में उन्होंने जिन इलाकों में सेवा दी, वहां के लोगों से आज उन्हें भरपूर समर्थन मिल रहा है। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने बिहार की समस्याओं को बहुत करीब से देखा है, विशेषकर युवाओं की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। लांडे ने आंकड़े साझा करते हुए कहा, ऱबिहार में करीब 60 लाख युवा डिग्रीधारी हैं और बिना डिग्री वाले मिलाकर करीब एक करोड़ युवा बेरोजगार हैं। दुर्भाग्यवश, सरकारों की नीतियों में इनकी समस्याओं को प्राथमिकता नहीं दी जाती।लक्ष्य: एक विकल्प खड़ा करना शिवदीप लांडे ने कहा कि उनका उद्देश्य बिहार की राजनीति में एक साफ-सुथरा और मजबूत विकल्प खड़ा करना है, जो युवाओं, किसानों और आम जनता की समस्याओं को सही मंच पर उठाए। उन्होंने भरोसा जताया कि उनकी पार्टी हिंद सेना जल्द ही पूरे बिहार में जनाधार बनाएगी और बदलाव की राजनीति की शुरूआत करेगी।

डीआरआई ने पूर्वोत्तर में 23.5 करोड़ रुपये की हेरोइन और मेथामफेटामाइन की जब्त, 4 तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में मादक पदार्थों की तस्करी से निपटने के लिए जारी प्रयासों के तहत राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने असम राइफल्स के साथ मिलकर मणिपुर और असम में दो अलग-अलग अभियानों में करीब 23.5 करोड़ रुपये मूल्य की प्रतिबंधित दवाएं जब्त की हैं। इसके अलावा तस्करी में शामिल 4 लोगों को गिरफ्तार किया है। वित्त मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रतिबंधित दवाओं की तस्करी पर कार्रवाई के तहत राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने 19 बीएन असम राइफल्स की सहायता से 21 मई, 2025 को राष्ट्रीय राजमार्ग-37 पर मणिपुर के नोनी में एक ट्रक के निचले हिस्से में से 569 ग्राम हेरोइन और 1,039 ग्राम मेथामफेटामाइन की गोलियों के पैकेट जब्त किए हैं। मंत्रालय ने कहा कि एक अन्य अभियान के तहत डीआरआई ने 22 मई को असम के हैलाकांडी जिले के एलोइचेरा में एक ट्रक के बेडलोड फ्लोर में से 2,640.53 ग्राम हेरोइन के पैकेट जब्त किए। मंत्रालय ने बताया कि एनडीपीएस अधिनियम, 1985 के तहत जब्त की गई इन प्रतिबंधित दवाओं की कीमत अंतरराष्ट्रीय ग्रे ड्रग मार्केट में करीब 23.5 करोड़ रुपये है। इस मामले में 4 व्यक्तियों को भी गिरफ्तार किया गया है।

डार क्रेडिट एंड कैपिटल: मजबूत लिस्टिंग के बाद बिकवाली के दबाव में लगा लोअर सर्किट

नई दिल्ली। पर्सनल लोन, सिक्योर्ड और अनसिक्योर्ड एमएसएमई लोन मुहैया कराने वाली कंपनी डार क्रेडिट एंड कैपिटल के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री की। हालांकि लिस्टिंग के थोड़ी देर बाद ही बिकवाली के दबाव के कारण इस शेयर पर लोअर सर्किट लग गया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 60 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी एंट्री 8.58 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 65.15 रुपये के स्तर पर हुई। मजबूत लिस्टिंग से खुश निवेशकों की खुशी उस समय फीकी पड़ गई, जब लिस्टिंग के तुरंत बाद बिकवाली के दबाव की वजह से ये शेयर गिरकर 61.90 रुपये के लोअर सर्किट लेवल पर आ गया। लोअर सर्किट लगने के बावजूद कंपनी के आईपीओ निवेशक अभी भी 3.17 प्रतिशत के मुनाफे में हैं। डार क्रेडिट एंड कैपिटल का 25.66 करोड़ रुपये का आईपीओ 21 से 23 मई के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 106.09 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 31.29 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 208.45 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 104.88 गुना सब्सक्राइब हुआ था।

मजबूत लिस्टिंग के बाद मुनाफावसूली के दबाव में फिसले बेलराइज इंडस्ट्रीज के शेयर

नई दिल्ली। ऑटोमोटिव पार्ट्स बनाने वाली कंपनी बेलराइज इंडस्ट्रीज के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। हालांकि मजबूत लिस्टिंग के बाद मुनाफावसूली होने की वजह से आईपीओ निवेशकों की खुशी कुछ ही देर में फीकी भी पड़ गई। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 90 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई और एनएसई पर इसकी एंट्री 11 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 98.50 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के तुरंत बाद खरीदारी के सपोर्ट से यह शेयर उछल कर 102.40 रुपये के स्तर तक पहुंचा, लेकिन इसके बाद मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण इसमें गिरावट आ गई। बाजार में सुबह 10ञ्30 बजे तक का कारोबार होने के बाद कंपनी के शेयर 3.68 प्रतिशत की तेजी के साथ 93.31 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहे थे। बेलराइज इंडस्ट्रीज का 2,150 करोड़ रुपये का आईपीओ 21 से 23 मई के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 43.14 गुना सब्सक्राइब हो गया था।

नई निसान मैग्नाइट सीएनजी रेट्रोफिटमेंट किट के साथ भी उपलब्ध

अहमदाबाद। निसान मोटर इंडिया की लोकप्रिय एसयूवी नई निसान मैग्नाइट अब सरकार द्वारा प्रमाणित सीएनजी रेट्रोफिटमेंट किट के साथ भी उपलब्ध होगी। निसान मोटर इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर सौरभ वत्स ने यहां जारी अपने बयान में कहा कि सीएनजी किट को देश के नियामकीय मानकों के अनुरूप मोटोजेन (थर्ड पार्टी) द्वारा डेवलप, मैन्यूफैक्चर और क्वालिटी एश्योर किया गया है। मोटोजेन किट के कंपोनेंट्स के लिए वारंटी देगी। यह पहल ग्राहकों को ध्यान में रखकर समाधान देने की कंपनी की प्रतिबद्धता को दिखाती है। सरकार द्वारा अधिकृत फिटमेंट सेंटर पर किट को लगाया जाएगा। पर्यावरण के प्रति सचेत ग्राहकों को ध्यान में रखकर पेश की गई इको फ्रेंडली सीएनजी किट फिटमेंट को चरणबद्ध तरीके से पूरे देश में उपलब्ध कराया जाएगा।

यूनीफाइड डाटा टेक ने निवेशकों को किया निराश, मजबूत लिस्टिंग के बाद बिकवाली के दबाव में लुढ़के शेयर

एजेंसी

नई दिल्ली। बैंकिंग और फाइनेंस सेक्टर को आईटी सर्विस देने वाली कंपनी यूनीफाइड डाटा टेक सॉल्यूशंस के शेयरों की आज प्रीमियम लिस्टिंग हुई। हालांकि लिस्टिंग के बाद मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण आईपीओ निवेशकों की खुशी फीकी पड़ गई। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 273 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी एंट्री 4.40 प्रतिशत लिस्टिंग गेन के साथ 285 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के बाद बिकवाली का दबाव बन जाने से इस शेयर में गिरावट आ गई। सुबह 11 बजे तक का कारोबार होने के बाद ये शेयर इश्यू प्राइस से 45 पैसे की कमजोरी यानी 0.16 प्रतिशत की गिरावट के साथ 272.55 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहा था। यूनीफाइड डाटा टेक सॉल्यूशंस का 144.47 करोड़ रुपये का आईपीओ 22 से 26 मई के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 91.12 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 83.22 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 212.43 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 43.62 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत कोई नया शेयर जारी नहीं किया गया है। इस आईपीओ के जरिये 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 52.92 लाख शेयर ऑफर फॉर सेल विंडो के तहत बेचे गए हैं। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2021-22 में कंपनी को 9.71 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2022-23 में बढ़कर 10.40 करोड़ रुपये और 2023-24 में 25.13 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का राजस्व 67 प्रतिशत वार्षिक से अधिक की चक्रवृद्धि दर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) से बढ़ कर 266.80 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। पिछले वित्त वर्ष की बात करें तो पहले 11 महीने के दौरान कंपनी को 31.68 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हो चुका था। इसी तरह इस अवधि में कंपनी 203.66 करोड़ रुपये का रेवेन्यू हासिल कर चुकी थी।

लगातार दूसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स और निफ्टी लुढ़के

एजेंसी

नई दिल्ली। दिन भर दबाव में कारोबार करने के बाद घरेलू शेयर बाजार लगातार दूसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की सपाट स्तर पर मिली-जुली शुरुआत हुई थी। बाजार खुलते ही खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों की चाल में मामूली तेजी भी आई, लेकिन थोड़ी देर बाद ही बिकवाली शुरू हो जाने की वजह से दोनों बेंचमार्क इंडेक्स लाल निशान में गिर गए। पूरे दिन हुई खरीद बिक्री के बाद सेंसेक्स 0.29 प्रतिशत और निफ्टी 0.30 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज दिन भर के कारोबार के दौरान डिफेंस और पीएसयू बैंक सेक्टर के शेयरों में खरीदारी होती रही। इसी तरह कैपिटल गुड्स, ऑयल एंड गैस, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और टेक इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। दूसरी ओर, एफएमसीजी, मेटल और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा। इसी तरह आईटी, ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में आज मिला-जुला कारोबार होता रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.22 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। दूसरी ओर, स्मॉलकैप इंडेक्स लगातार चौथे दिन बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहा। इस इंडेक्स ने आज 0.50 प्रतिशत की छलांग लगाई।

आज शेयर बाजार में आई कमजोरी के बावजूद स्मॉलकैप शेयरों में हुई खरीदारी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब 4 हजार करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 444.69 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 443.65 लाख करोड़ रुपये था।

हिंडनबर्ग मामले में लोकपाल ने पूर्व सेबी प्रमुख बुच को दी 'क्लीन चिट'

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई। लोकपाल ने भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की पूर्व अध्यक्ष माधबी पुरी बुच को क्लीन चिट दे दी है। इसके साथ ही हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट में लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों को भी खारिज कर दिया। लोकपाल ने हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के आधार पर पूर्व सेबी प्रमुख माधबी पुरी बुच के खिलाफ शिकायतों का निपटारा करते हुए उनपर लगे आरोपों को अप्रमाणित और तुच्छ बताया। इसके साथ ही कहा कि ये आरोप बिना सत्यापन योग्य साक्ष्य के अनुमान पर आधारित थे। इन्हें लेकर किसी जांच की जरूरत नहीं है। भ्रष्टाचार से जुड़ी शिकायतों की जांच करने वाली संस्था ने कहा कि यह आरोप पूरी तरह से धारणा पर आधारित है और उसके समर्थन में कोई ठोस सबूत नहीं हैं। लोकपाल ने कहा कि पिछले साल दर्ज की गई तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा समेत अन्य सभी की शिकायतें मूल रूप से एक निवेश कंपनी की रिपोर्ट पर

आधारित थीं। रिपोर्ट में पूरा ध्यान अदाणी समूह की कंपनियों को 'बेनकाब' करने या जांच के घेरे में लाने पर था। उल्लेखनीय है कि अमेरिकी संस्था हिंडनबर्ग रिसर्च ने 10 अगस्त, 2024 को प्रकाशित अपनी रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि माधबी पुरी बुच और उनके पति ने कुछ विदेशी फंड्स में हिस्सेदारी रखी थी, जो कथित रूप से अडाणी समूह के खिलाफ चल रहे धनशोधन की जांच से जुड़े थे। हालांकि, बुच और उनके पति ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा था कि हिंडनबर्ग ने उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के लिए यह हमले किए हैं।

बेलराइज इंडस्ट्रीज लिमिटेड का शेयर पहले दिन के कारोबार में आठ फीसदी चढ़ा

एजेंसी

मुंबई। पुणे स्थित ऑटोमोटिव कंपोनेंट बनाने वाली कंपनी बेलराइज इंडस्ट्रीज लिमिटेड के शेयर ने घरेलू शेयर बाजार में जोरदार शुरुआत की। कंपनी का शेयर 90 रुपये के इश्यू प्राइस की तुलना में 11 फीसदी से अधिक प्रीमियम पर सूचीबद्ध हुए। हालांकि, बाजार में सूचीबद्धता के दिन कंपनी का शेयर अपने निर्गम मूल्य से आठ फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुआ। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर बेलराइज इंडस्ट्रीज लिमिटेड का शेयर 90 रुपये के निर्गम मूल्य से 9.44 फीसदी की तेजी के साथ 98.50 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। कारोबार के दौरान यह 14.66 फीसदी उछलकर 103.20 रुपये पर पहुंच गया था। हालांकि, अंत में यह 8.18 फीसदी की तेजी के साथ 97.37 रुपये के भाव पर बंद हुआ है, जो पेशकश मूल्य से 8.19 फीसदी ऊपर था। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) में बेलराइज इंडस्ट्रीज लिमिटेड का

शेयर 100 रुपये पर खुला और 90 रुपये के निर्गम मूल्य की तुलना में 11.11 फीसदी की बढ़त के साथ कारोबार के दौरान 102.4 रुपये के उच्चतम स्तर और 91.55 रुपये के निम्नतम स्तर को छूते हुए 8.23 फीसदी की बढ़त के साथ 97.41 रुपये पर बंद हुआ। वॉल्यूम के संदर्भ में एनएसई पर कंपनी के शेयर ने 19.84 करोड़ शेयरों और बीएसई पर 2.01 करोड़ शेयरों के साथ कारोबार किया। बेंचमार्क सूचकांकों में कमजोरी के बावजूद 8 फीसदी से अधिक की बढ़त दर्ज की है। कारोबार के अंत में कंपनी का शेयर कारोबार के पहले सत्र में ही 8,664.75 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ बंद हुआ।

लगातार दूसरे दिन सस्ता हुआ सोना, चांदी की भी घटी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज लगातार दूसरे दिन गिरावट का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 400 रुपये से लेकर 440 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। भाव में कमजोरी आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 97,040 रुपये से लेकर 97,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 88,950 रुपये से लेकर 89,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में भी आज मामूली गिरावट आई है, जिसके कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 99,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 97,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 89,100 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 97,040 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 88,950 रुपये

प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 97,090 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,000 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 97,040 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 97,040 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 97,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 89,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 97,090 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 89,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

जयपुर में 24 कैरेट सोना 97,190 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 97,040 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 88,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

ट्राई ने छह गीगाहर्ट्ज, ई एवं वी बैंड में स्पेक्ट्रम आवंटन के लिए जारी किया परामर्श पत्र

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने निचले 6 गीगाहर्ट्ज, 7 गीगाहर्ट्ज, 13 गीगाहर्ट्ज, 15 गीगाहर्ट्ज, 18 गीगाहर्ट्ज, 21 गीगाहर्ट्ज बैंड, ई-बैंड और वी-बैंड में माइक्रोवेव स्पेक्ट्रम के आवंटन पर परामर्श पत्र जारी किया है। संचार मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में बताया गया है कि ट्राई ने निचले 6 गीगाहर्ट्ज, 7 गीगाहर्ट्ज, 13 गीगाहर्ट्ज, 15 गीगाहर्ट्ज, 18 गीगाहर्ट्ज, 21 गीगाहर्ट्ज बैंड के साथ-साथ ई एवं वी बैंड में स्पेक्ट्रम के आवंटन पर परामर्श पत्र जारी किया है। ट्राई ने टिप्पणियों के लिए अंतिम तारीख 25 जून तथा जवाबी टिप्पणियों के लिए अंतिम तिथि 9 जुलाई तय की है। नियामक ने कहा, ''6 गीगाहर्ट्ज (निम्न), 7 गीगाहर्ट्ज, 13 गीगाहर्ट्ज, 15 गीगाहर्ट्ज, 18 गीगाहर्ट्ज, 21 गीगाहर्ट्ज बैंड, ई-बैंड और वी-बैंड में स्पेक्ट्रम के आवंटन पर जारी परामर्श पत्र हितधारकों से टिप्पणियां तथा जवाबी टिप्पणियां मांगने के लिए नियामक की वेबसाइट www.trai.gov.in पर उपलब्ध है।'' दूरसंचार विभाग (डॉट) ने 12 अगस्त, 2022 के एक पत्र के जरिए ईएंडवी बैंड तथा माइक्रोवेव एक्सेस (एमडब्ल्यूए) के साथ-साथ उक्त आवृत्ति बैंड में माइक्रोवेव बैकबोन (एमडब्ल्यूबी) स्पेक्ट्रम के आवंटन के लिए सिफारिशें प्रदान करने के लिए ट्राई से संपर्क किया था। इसके बाद ट्राई ने ईएंडवी बैंड में स्पेक्ट्रम के आवंटन तथा माइक्रोवेव एक्सेस (एमडब्ल्यूए) और माइक्रोवेव बैकबोन (एमडब्ल्यूबी) पर एक परामर्श पत्र जारी किया है, ताकि इस विषय पर हितधारकों की टिप्पणियां मांगी जा सकें।

देश के औद्योगिक उत्पादन की रफ्तार अप्रैल में सुस्त पड़कर 2.7 फीसदी पर

एजेंसी

नई दिल्ली। अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर झटका लगने वाली खबर है। देश के औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर की रफ्तार अप्रैल में विनिर्माण, खनन एवं बिजली क्षेत्रों के खराब प्रदर्शन की वजह से सुस्त पड़कर 2.7 फीसदी रह गयी। अप्रैल, 2024 में यह 5.2 फीसदी की दर से बढ़ा था। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने जारी आंकड़ों में बताया कि औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) पर आधारित देश के औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर की रफ्तार अप्रैल में सुस्त पड़कर 2.7 फीसदी रही है। आईआईपी के संदर्भ में मापा गया औद्योगिक उत्पादन अप्रैल, 2024 में 5.2 फीसदी बढ़ा था। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने जारी आंकड़ों में मार्च के लिए औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर के

अनुमान को संशोधित कर 3.9 फीसदी कर दिया है, जबकि पिछले महीने जारी आंकड़ों में ये अनुमान तीन फीसदी था। आंकड़ों के अनुसार विनिर्माण क्षेत्र की उत्पादन वृद्धि अप्रैल में थोड़ी कम होकर 3.4 फीसदी रह गई, जो एक साल पहले इसी अवधि में 4.2 फीसदी थी। खनन उत्पादन में 0.2 फीसदी की गिरावट आई है, जिसमें एक साल पहले 6.8 फीसदी की वृद्धि हुई थी। इसके अलावा बिजली उत्पादन की वृद्धि दर भी अप्रैल, 2025 में धीमी होकर एक फीसदी रह गई है, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 10.2 फीसदी थी। मंत्रालय ने बताया कि संशोधित कैलेंडर के अनुसार औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) का त्वरित अनुमान अब हर महीने की 28 तारीख को (या 28 तारीख को छुट्टी होने पर अगले कार्य दिवस पर) जारी किया जाएगा। यह सूचकांक स्रोत एजेंसियों से प्राप्त आंकड़ों के साथ संकलित किया जाता है, जो बदले में उत्पादक कारखानों/प्रतिष्ठानों से डेटा प्राप्त करते हैं। आईआईपी की संशोधन नीति के अनुसार इन त्वरित अनुमानों को बाद की रिलीज़ में संशोधित किया जाएगा।

इंडिगो एयरलाइन के नए चेयरमैन होंगे विक्रम सिंह मेहता, वेंकटरमणी सुमंत्रन का स्थान लेंगे

एजेंसी

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी एवं बजट एयरलाइन इंडिगो ने विक्रम सिंह मेहता को नए चेयरमैन के रूप में नियुक्त किया है, जो वेंकटरमणी सुमंत्रन का स्थान लेंगे। मेहता मई, 2022 से इंटरग्लोब एविएशन लिमिटेड (इंडिगो) के बोर्ड के सदस्य हैं।इंडिगो के चेयरमैन मेहता सुमंत्रन ने बोर्ड सदस्य के रूप में अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा होने के बाद पद से इस्तीफा दे दिया था। सुमंत्रन को मई, 2022 में अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उन्होंने कोविड के बाद पिछले तीन वर्षों में इंडिगो की मजबूत रिकवरी और अविश्वसनीय वृद्धि के दौरान बोर्ड का मार्गदर्शन किया। नए चेयरमैन विक्रम सिंह मेहता मई, 2022 से इंटरग्लोब एविएशन लिमिटेड (इंडिगो) के बोर्ड के सदस्य हैं। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी हैं। उन्होंने

भारत में शेल ग्रुप ऑफ़ कंपनीज़ के अध्यक्ष और मिस्र में शेल मार्केट्स और शेल केमिकल्स के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के रूप में काम किया है। उन्होंने विभिन्न कंपनियों के बोर्ड में भी काम किया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफन कॉलेज से गणित में स्नातक मेहता ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से राजनीति और अर्थशास्त्र में तथा टफ्ट्स विश्वविद्यालय से ऊर्जा अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि भी हासिल की है।

गेहूं की तरह बोएं धान, कम होगी लागत, उपज भी होगी बराबर

एजेंसी

लखनऊ। कृषि विशेषज्ञों की राय है कि धान की फसल भी गेहूं की तरह सीधे लाइन से बोआई कर नर्सरी से लेकर पलेवा तक का खर्च बचाया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि खरीफ की मुख्य फसल धान है। नर्सरी में तैयार पौधों को कुशलता से निकालना, इनकी रोपाई के लिए खेत की तैयारी, फसल संरक्षा के उपायों से लेकर फसल की कटाई और मड़ाई तक का काम काफी श्रमसाध्य है। स्वाभाविक है इस सबमें अच्छी खासी लागत आती है। विशेषज्ञों का मानना है कि धान की फसल भी गेहूं की तरह सीधे लाइन से बोआई कर नर्सरी से लेकर पलेवा तक का खर्च बचाया जा सकता है। जीरो सीड ड्रिल, हैप्पी सीडर से बोआई आसान भी है। यही नहीं इसके जरिए बोआई के दौरान खाद और बीज एक साथ गिरने से पौधों को खाद की उपलब्धता भी बढ़ जाती है। फसल के लाइन से उगने के कारण फसल संरक्षा के उपाय में भी आसानी होती है। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश सरकार लाइन सोइंग के लाभों से किसानों को लगातार जागरूक कर रही है। सरकार का तो यहां तक भी प्रयास है कि जिस फसल के लाइन सोइंग उपयुक्त है उनको किसान लाइन से बोएं। जिनको बेड बनाकर बोना है उनको बेड बनाकर बोएं। इनमें उपयोग आने वाले कृषि यंत्रों पर सरकार 50 प्रतिशत तक अनुदान भी देती है।

विदेशी सामानों के उपयोग से परहेज करने के लिए प्रधानमंत्री की अपील का व्यापारियों ने किया स्वागत

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा सांसद और कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेशी उत्पादों से परहेज करने की अपील का समर्थन और स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि यह आत्मनिर्भर भारत' के प्रति उनके अटूट संकल्प को दर्शाती है। एक ऐसा भारत, जहां देशवासी स्वयं के बनाए उत्पादों का निर्माण, उपभोग और निर्यात करें। चांदनी चौक से भाजपा के सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री की यह अपील न केवल अर्थव्यवस्था से जुड़ी है, बल्कि यह आत्म-सम्मान, आर्थिक स्वतंत्रता और हमारे देश के स्थानीय उत्पादकों एवं व्यापारियों के सशक्तिकरण का आह्वान है। उनकी अपील को कारगर बनाने के लिए जरूरी है कि व्यापारियों एवं निर्माताओं को ईज ऑफ डूइंग बिजनेस विजन के तहत सिंगल विंडो व्यवस्था उपलब्ध कराई जाए, जिससे उनकी विभिन्न विभागों से संबंधित विषयों का एक ही स्थान पर हल हो सके। साथ ही कर एवं अन्य कानूनों एवं नियमों के पालन का बोझ भी कम से कम हो तथा इसके साथ ही आम उपयोग में आने वाली वस्तुएं जो विदेश से आती हैं, उन पर ड्यूटी का अधिभार ज्?यादा हो। इससे उनका आयात कम होगा और भारतीय सामान का निर्माण एवं उपयोग अधिक हो सकेगा। कैट महामंत्री यह भी कहा कि प्रधानमंत्री की अपील का मूल भाव यह है कि भारतीय उत्पादों के ही उपयोग की श्रृंखला को शुरू करने हेतु हम कम से कम रोजमर्रा की जरूरतों के लिए स्वदेशी उत्पादों का ही उपयोग करें, जिससे इस दिशा में एक सशक्त कदम तो बढ़े। अभी कुछ वस्तुओं के निर्माण हेतु हमें विदेशी निर्यात पर निर्भर रहना पड़ता है, ऐसी वस्तुओं के स्वदेशी निर्माण के लिए आवश्यक कदम उठाये जाएं। खंडेलवाल ने यह भी कहा की ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा विदेशी सामान बेचा जा रहा है, उन पर भी कढ़ाई से लगाम कसी जाए। खंडेलवाल ने कहा कि यह अपील छोटे व्यापारियों, लघु उद्योग और विनिर्माताओं की भावना से पूरी तरह मेल खाती है, जो वास्तव में भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। हर विदेशी उत्पाद जिसे हम देशी विकल्प से बदलते हैं, वह हमारे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है, रोजगार पैदा करता है और आयात पर हमारी निर्भरता को कम करता है। उन्होंने कहा कि यह एक निर्णायक क्षण है। भाजपा सांसद ने जोर देते हुए कहा कि मौजूदा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब आपूर्ति श्रृंखलाएं बदल रही हैं और देश विश्वसनीय साझेदारों की तलाश में हैं। भारत को इस अवसर का लाभ उठाते हुए वैश्विक विनिर्माण और सेवा केंद्र बनने की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए । हमें अब 'स्वदेशी' को केवल भावना नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय आर्थिक रणनीति बनाना होगा। उन्होंने उपभोक्ताओं से आह्वान किया कि वे सोच-समझकर खरीदारी करें और दैनिक आवश्यकताओं, इलेक्ट्रॉनिक्स, परिधान, खिलौने, फर्नीचर से लेकर डिजिटल सेवाओं तक, हर क्षेत्र में भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता दें। इसके साथ ही उन्होंने ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स, रिटेलर्स और कॉर्पोरेट्स से आग्रह किया कि वे अपने प्लेटफ़ॉर्म और दुकानों पर भारतीय उत्पादों को प्रमुखता दी जाए। खंडेलवाल ने कहा यदि घरेलू मांग विदेशी उत्पादों से हटकर भारतीय उत्पादों की ओर मुड़ती है तो एमएसएमई और स्थानीय विनिर्माताओं को बड़ा लाभ मिलेगा। अब समय आ गया है कि भारतीय उपभोक्ता 'वोकल फॉर लोकल' के ब्रांड एंबेसडर बनें। इसके लिए सरकार को भी नीति समर्थन, सरकारी खरीद में प्राथमिकता और प्रोत्साहन देना चाहिए, ताकि देश में उत्पादन को बढ़ावा मिले। उन्होंने कहा कि यह एक निर्णायक क्षण है।

कुछ नहीं होगा तुम्हें...दीपिका कक्कड़ को कैंसर, गौरव खन्ना

गौहर खान

समेत सेलेब्स ने भेजी दुआएं

टेलीविजन की मशहूर एक्ट्रेस दीपिका कक्कड़ ने हाल ही में अपने फैंस के साथ एक बेहद दुखद खबर साझा की है. उन्होंने सोशल मीडिया पर बताया कि उन्हें स्टेज 2 लिवर कैंसर है. इस खबर ने न केवल उनके लाखों फैंस को बल्कि पूरी इंडस्ट्री को सदमे में डाल दिया है. दीपिका के इस खुलासे के बाद, उनके पुराने सह-कलाकारों से लेकर इंडस्ट्री के दोस्तों और करीबियों तक, हर कोई उनकी सोशल मीडिया पोस्ट पर कमेंट करते हुए उनके जल्द स्वस्थ होने और इस मुश्किल घड़ी से निकलने के लिए लगातार दुआएं और हिम्मत भेज रहा है.

दीपिका की पोस्ट पर कमेंट करते हुए उनके कई साथियों ने अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं. हाल ही में 'सेलिब्रिटी मास्टरशेफ' में उनके साथ काम कर चुके गौरव खन्ना यानी की 'अनुपमा' के अनुज ने दीपिका की सोशल मीडिया पोस्ट के नीचे लिखा कि स्टे स्ट्रॉन्ग, दीपिका. हम सभी मिलकर तुम्हारे लिए दुआ करेंगे. हमें यकीन है कि तुम इसे जरूर हराओगी. कभी उम्मीद मत हारना. तो इसी शो के एक और कंटेस्टेंट राजीव अदातिया ने कमेंट किया, हमेशा तुम्हारे साथ हूं दीपिका!!! तुम एक मजबूत लड़की और फाइटर हो! तुम ठीक हो जाओगी! तुम्हें ढेर सारा प्यार और बहुत सी ताकत भेज रहा हूं!

गौहर खान और मेघा धाडे ने भी भेजी दुआएं

दीपिका और शोएब के अच्छी दोस्त गौहर खान ने अपनी दुआएं भेजते हुए लिखा, मेरी सारी दुआएं दीपिका तुम्हारे साथ हैं. अल्लाह तुम्हें ठीक करे और तुम्हें एक अच्छी, लंबी जिंदगी दे. आमीन. 'बिग बॉस 12' में दीपिका के साथ रही मेघा धाडे ने भी दिल से कहा, दीपी कुछ नहीं होगा तुम्हेंज्मैं बस इतना जानती हूं कि तुम बहुत अच्छी इंसान हो और अच्छे लोगों की भगवान परीक्षा लेते हैं पर उनका कुछ बुरा नहीं हो सकता. हम सब तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं..!!! बाप्पा तुम्हें आशीर्वाद दें. जल्दी से ठीक हो जाओगी तुम, घबराना नहीं बिल्कुल.. हम तुमसे प्यार करते हैं.

'ससुराल सिमर का' की टीम ने भी दिया साथ

दीपिका के पॉपुलर शो 'ससुराल सिमर का' के सह-कलाकार अविका गौर और जयंती भाटिया ने भी उन्हें प्यार और प्रार्थनाएं भेजीं. अविका ने लिखा कि मैं आपकी शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रही हूं, दी. वहीं जयंती भाटिया ने कहा-'तुम एक बहुत बहादुर लड़की होज्.अपनी ताकत बनाए रखो.' इन सितारों के अलावा, श्रद्धा आर्या, आकांक्षा रावत, आरती सिंह और डेलनाज़ ईरानी सहित कई अन्य सेलेब्रिटीज ने दीपिका के की हौसलाअफजाई की है.

'बिग बॉस 19' के साथ OTT के सीजन 4 की कमान भी संभालेंगे सलमान खान!

टेलीविजन के सबसे बड़े रियलिटी शो 'बिग बॉस' के फैंस के लिए इस बार डबल खुशखबरी है. जहां एक तरफ 'बिग बॉस सीजन 19' की तैयारियां जोरों पर हैं, वहीं अब झक्क्9 हिंदी डिजिटल को 'बिग बॉस' से जुड़े सूत्रों ने बताया है कि इसके ओटीटी वर्जन 'बिग बॉस ओटीटी सीजन 4' की कमान भी 'भाईजान' सलमान खान ही संभालेंगे. अगर ये खबर सच साबित होती है, तो दर्शकों को लगातार सलमान खान का 'बिग बॉस' वाला अंदाज टीवी और ओटीटी, दोनों प्लेटफार्म पर देखने को मिलेगा.कुछ दिनों पहले सोशल मीडिया पर 'बिग बॉस' के मेकर्स और कलर्स टीवी के बीच अनबन की खबरें वायरल हो रही थीं. इस दौरान ये भी कहा जा रहा था कि 'बिग बॉस' सोनी टीवी पर शिफ्ट हो सकता है. लेकिन झक्क्9 हिंदी डिजिटल ने आपको सबसे पहले बताया था कि ये बात महज एक अफवाह है. अब सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, 'बिग बॉस' के साथ-साथ 'बिग बॉस ओटीटी' भी अपनी वापसी के लिए तैयार है और इस बार सलमान खान ही इन दोनों शोज को होस्ट करेंगे.

अगस्त में आएगा 'बिग बॉस ओटीटी 4'

जानकारी के मुताबिक, अगस्त 2025 में 'बिग बॉस ओटीटी सीजन 4' जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगा. ये सीजन लगभग 6 से 8 हफ्ते चलेगा और इस सीजन के खत्म होने के डेढ़ महीने बाद, यानी अक्टूबर 2025 में कलर्स टीवी पर सलमान खान के 'बिग बॉस सीजन 19' की शुरुआत होगी. भले ही सलमान खान ने अब तक 'बिग बॉस ओटीटी 4' को होस्ट करने के लिए हामी नहीं भरी है, लेकिन मेकर्स को पूरा विश्वास है कि वे दबंग खान को ओटीटी का सीजन होस्ट करने के लिए भी मना लेंगे.

करण जौहर ने की थी शुरुआत

'बिग बॉस ओटीटी' के पहले सीजन को करण जौहर ने होस्ट किया था, जिसकी विनर दिव्या अग्रवाल थीं. लेकिन इस शो का दूसरा सीजन खुद सलमान खान ने ही संभाला था. सलमान खान द्वारा होस्ट किया गया ओटीटी का ये सीजन सबसे ज्यादा सफल रहा, जिसमें यूट्यूबर एल्विश यादव ने 'बिग बॉस' की ट्रॉफी अपने नाम की थी. दूसरे सीजन को मिली जबरदस्त सफलता के बावजूद सलमान ने 'बिग बॉस ओटीटी 3' को होस्ट करने का ऑफर रिजेक्ट कर दिया था. उस समय अनिल कपूर ने 'बिग बॉस ओटीटी 3' के होस्ट की कुर्सी संभाली थी, हालांकि वो सीजन कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाया था.

काला चश्मा, सफेद लहंगा...दोस्त की शादी में दिखा आलिया भट्ट का अनोखा अंदाज, 'बोले चूड़ियां' पर किया जमकर डांस

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट ने कान्स 2025 में डेब्यू किया है और पिछले दिनों उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर काफी वायरल रहीं. लोगों ने आलिया का कान्स वाला लुक काफी पसंद किया था. अब आलिया की कुछ और तस्वीरें, वीडियो सामने आए हैं जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं. आलिया इन दिनों स्पेन में हैं जहां वो अपनी खास दोस्त तान्या शाह गुप्ता की शादी अटैंड करने गई हैं.सामने आई आलिया भट्ट की तस्वीरों में उन्होंने सफेद रंग का बेहतरीन लहंगा और काला चश्मा पहना है. इसमें आलिया बेहद स्टाइलिश और खूबसूरत नजर आ रही हैं. आलिया की इन तस्वीरों के साथ एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें आलिया भट्ट अपनी गर्ल गैंग के साथ सुपरहिट गाना 'बोले चूड़ियां' पर डांस करती दिख रही हैं.

दोस्त की शादी में आलिया भट्ट का जलवा

आलिया भट्ट के फैन पेज के एक्स हैंडल पर एक तस्वीर शेयर की गई है, जिसमें आलिया भट्ट अपनी कई दोस्तों के साथ नजर आ रही हैं. इसमें दुल्हन तान्या शाह गुप्ता भी हैं और बाकी दोस्त भी लहंगा पहने हैं. लेकिन आलिया भट्ट सबसे अलग रही हैं, उन्होंने सफेद लहंगा और काला चश्मा पहना है जो उन्हें सबसे अलग बना रहा है.

'बोले चूड़ियां' गाने पर आलिया भट्ट ने किया डांस

इसी फैन पेज पर एक वीडियो भी शेयर किया जा गया है. इस वीडियो में कुछ लड़किया और एक लड़का है जो डांस करते दिख रहे हैं.

इस ग्रुप में आलिया भट्ट भी डांस कर रही हैं और बैकग्राउंड में 'बोले चूड़ियां' गाना बज रहा है जो 2001 में रिलीज हुई करण जौहर की ब्लॉकबस्टर फिल्म कभी खुशी कभी गम का है. इस शादी में आलिया भट्ट ने फ्यूजन लहंगा पहना है और उसपर उन्होंने ओवरकोट पहना है.

जो उनकी ड्रेस में चार-चांद लगाने का काम कर रहा है. लहंगे पर आलिया ने बोल्ड ब्लाउज पहना है और इस ड्रेस में आलिया भट्ट क्यूट दिख रही हैं.

आलिया वैसे भी हर ड्रेस में अच्छी दिखती हैं लेकिन जब वो ट्रेडिशन ड्रेस पहनती हैं तो और भी खूबसूरत दिखती हैं. इस बार तो आलिया ने ट्रेडिशन ड्रेस में वेस्टर्स का तड़का दिया जो उन्हें सबसे अलग बनाता है.

करीना कपूर के भाई से ब्रेकअप के बाद जिस लड़के से इश्क लड़ा रहीं

तारा सुतारिया

वो सारा अली खान को कर चुका है डेट!

बॉलीवुड की खूबसूरत एक्ट्रेस तारा सुतारिया अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी चर्चा में बनी रहती हैं. बताया जा रहा है कि एक्ट्रेस अब फिर से किसी के प्यार में है. रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि तारा सुतारिया को अब अक्षय कुमार के को-एक्टर वीर पहाड़िया से प्यार हो गया है. दोनों को लगातार साथ में देखा जा रहा है और अब सूत्र ने दोनों का रिश्ता कन्फर्म कर दिया है.

वीर पहाड़िया पर आया तारा का दिल

ई टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक सूत्र ने जानकारी देते हुए बताया है कि तारा और वीर पहाड़िया को एक दूसरे से प्यार हो गया है. सूत्र ने कहा, तारा सुतारिया, वीर पहाड़िया को डेट कर रही हैं. दोनों ने कुछ महीनों पहले ही एक दूसरे को डेट करना शुरू किया है. दोनों साथ में क्वालिटी टाइम बिता रहे हैं और फिलहाल एक दूसरे को समझ रहे हैं.

पहली बार कहां साथ दिखे थे वीर-तारा ?

वीर और तारा को पहली बार साथ में एक फैशन वीक के दौरान देखा गया था. जहां दोनों शो स्टॉपर थे. इसके बाद से तारा और वीर को कई बार साथ में डिनर डेट पर स्पॉट किया गया. हालांकि अभी तक दोनों में से किसी ने भी अपने रिश्ते को लेकर कुछ नहीं कहा है. दोनों ने ही इस मामले में फिलहाल चुप्पी साध रखी है.

सारा अली खान संग जुड़ चुका है वीर का नाम

तारा से पहले वीर का नाम जानी-मानी एक्ट्रेस सारा अली खान संग जुड़ चुका है. दोनों के अफेयर की काफी चर्चा हुई थी. हालांकि इस रिश्ते को कोई मंजिल नहीं मिल पाई और जल्द ही दोनों कलाकार अलग हो गए थे. वहीं तारा का नाम अरुणोदय सिंह और आदर जैन से जुड़ चुका है.

4 साल तक तारा ने आदर को किया था डेट

तारा सुतारिया, आदर जैन संग अपने रिश्ते को लेकर काफी सुर्खियों में रही हैं. आदर जैन, रणबीर कपूर और करीना कपूर खान की बुआ रीमा जैन के बेटे हैं. आदर ने तारा को साल 2019 से डेट करना शुरू किया था और साल 2023 तक दोनों साथ रहे. हालांकि फिर दोनों का ब्रेकअप हो गया था. ब्रेकअप के बाद आदर ने अलेखा आडवाणी से शादी करके घर बसा लिया. जबकि तारा का नाम अब वीर पहाड़िया संग जुड़ रहा है.